स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

Indian Council for Cultural Relations
भारतीय सांस्कृतिक सम्बंध परिषद्

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

निरंतरा

श्री लंका हिंदी समाचार

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र,
भारतीय उच्चायोग, कोलंबो

www.hcicolombo.org | www.facebook.com/indianculturalcentre

वर्ष: 3 | अंक: 03 | जनवरी: 2019 | वार्षिक प्रकाशन | ISSN 2659-2355

महात्मा गांधी के 150वें जयंती वर्ष में विशेषांक

जिस सेवा में निष्काम भाव से देह लगाई जाए, वह सेवा ही भगवान की सेवा है। – महात्मा गांधी

सत्यमेव जयते

भारतीय उच्चायोग
कोलंबो
HIGH COMMISSION OF INDIA
COLOMBO

विश्व हिंदी दिवस 2019 के अवसर पर स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र की वार्षिक हिंदी पत्रिका का तीसरा अंक 'निरंतरा' – श्री लंका हिंदी समाचार महात्मा गांधी की स्मृति में उनके 150वें जयंती वर्ष में प्रकाशित होने जा रहा है, मैं यह जानकर हर्षित हूँ।

महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी की गौरवशाली परंपराओं को भारत और श्री लंका दोनों ही देश निरंतर बखूबी निभा रहे हैं और संसार भर में अहिंसा, शांति और सौहार्द का वातावरण निर्मित करने में संलग्न हैं। भूमंडलीकरण के इस दौर में महात्मा गांधी के द्वारा दिखाए गए मार्ग पर चलने की उपयोगिता स्वयंसिद्ध हो रही है और महात्मा गांधी के विचारों की प्रासंगिकता दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है।

श्री लंका में महात्मा गांधी ने जो समय बिताया उस पर आधारित महादेव देसाई जी की किताब – 'विद् गांधी जी इन सीलोन' प्रसिद्ध है। मुझे गर्व है कि पहली बार श्री लंका में हिंदी पढ़ाने वाले विश्वविद्यालय प्राध्यापकों व अन्य अध्यापकों ने महात्मा गांधी जी के श्री लंका में दिए गए भाषणों में से कुछ महत्वपूर्ण अंशों का हिंदी अनुवाद कर इस पत्रिका में प्रस्तुत किया। श्री लंका में हिंदी सीखने वाले विद्यार्थियों के लिए यह अनुपम उपहार होगा।

द्वीप देश श्री लंका से भारत के राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक संबंध सदा ही सशक्त रहे हैं। हिंदी भाषा और साहित्य की लोकप्रियता को देखते हुए स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र नित नए रूपों में हिंदी शिक्षण के कार्यक्रम आयोजित करता रहता है। हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार में श्री लंका के स्थानीय विश्वविद्यालय, विद्यालय और स्वयंसेवी संस्थाएँ स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र के साथ कंधे से कंधा मिला कर कार्य कर रही हैं। उनकी भूमिका अत्यंत सराहनीय है।

यह पत्रिका इस दिशा में एक और सार्थक प्रयास है। श्री लंका के साथ–साथ वैश्विक मंच पर भी यह पत्रिका हिंदी साहित्य में एक नया अध्याय जोड़ेगी, मुझे पूर्ण विश्वास है।

नव वर्ष की हार्दिक मंगलकामनाओं सहित इस सद्प्रयास के लिए पत्रिका के संपादक मंडल और स्थानीय व विदेशी लेखकों को अनंत शुभकामनाएँ।

तरनजीत

भवदीय
तरनजीत सिंह संधु
उच्चायुक्त
भारतीय उच्चायोग, कोलंबो

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, **निरंतरा** – श्री लंका हिंदी समाचार का तीसरा संस्करण महात्मा गांधी जी पर विशेषांक के रूप प्रस्तुत कर रहा है, यह एक सुखद संयोग है।

प्रथम और द्वितीय संस्करण में आप सब के सहयोग और मार्गदर्शन ने हमारे उत्साह को खूब बढ़ाया। इस संस्करण में हमने भारत श्री लंका के सांस्कृतिक और वैचारिक सूत्रों को एक माला में पिरोने का प्रयास किया है। महात्मा गांधी जी के 150वें जयंती वर्ष में हमारा यह अंक गांधी जी को समर्पित है।

गांधी जी विश्व मानव के हित और कल्याण के लिए जो कुछ कहना चाहते थे, किताबों में लिखकर नहीं बल्कि अपने जीवन में उतारकर कह दिया। आशा है कि हिंदी लघु पत्रिका का यह संस्करण महात्मा गांधी के विचारों को पुनर्जीवित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य करेगा।

नए–पुराने लेखक इसी तरह हमारे साथ रहेंगे तो पत्रिका का उत्कर्ष निश्चित है। संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

सबके लिए नववर्ष मंगलमय हो ।

राजश्री बेहेरा

राजश्री बेहेरा
निदेशिका
स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो

विश्व हिंदी दिवस 2018

विश्व हिंदी दिवस 2018 के कार्यक्रम में स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो की द्वितीय हिंदी लघु पत्रिका "श्री लंका हिंदी समाचार" का विमोचन भारतीय उच्चायोग कोलंबो के प्रभारी उच्चायुक्त महोदय तरनजीत सिंह संधु के कर कमलों द्वारा किया गया। साथ में भारतीय उच्चायोग कोलंबो के उप उच्चायुक्त अरंदिम बागची, कॅलणिय विश्वविद्यालय के उप कुलपति प्रोफ़ेसर डॉ॰ लक्ष्मण सेनेविरत्न जी, हिंदी चेयर डॉ॰ शीरीन कुरैशी एवं स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र की हिंदी शिक्षिकाएँ।

जिस–जिस से पथ पर स्नेह मिला उसे उस राही को धन्यवाद

सत्य में गांधी जी की निष्ठा ऐसी ही थी जैसी भक्त की भगवान होती है। जीवन के सब रूप उसी का विस्तार हैं। हृदय और व्यवहार में सदा सच्चे रहते हुए गांधी जी ने साधारण व सरल जीवन शैली अपनाते हुए भी असाधारण कार्य संभव कर दिखाए। विरोधी को नुकसान पहुँचाए बिना उसका हृदय परिवर्तन कर देने वाले कौशल की वर्तमान में बहुत ज़रूरत है। अपने मौलिक अधिकार पाने के अहिंसक तरीकों की खोज आज भी जारी है। आज 150 वर्ष बाद भी दुनिया भर के जिज्ञासुओं के लिए महात्मा गांधी अदम्य प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में व्याप्त पीड़ा और हिंसा के निदान हेतु आज भी महात्मा गांधी द्वारा सुझाये–समझाये जीवन के विभिन्न रूपों को अपनाने का प्रयास निरंतर चल रहा है।

मातृभाषा गुजराती होने के बावजूद महात्मा गांधी ने हिंदी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया और सार्वजनिक सभाओं में आम जन को हिंदी में ही संबोधित किया। हिंदी की पहुँच को वे भलीभांति जानते थे इसलिए उन्होंने ही दक्षिण भारत हिंदी–प्रचार–सभा की स्थापना की। वे जानते थे कि देश की तरक्की के लिए, आम लोगों के लिए हिंदी का उत्थान और प्रचार अनिवार्य है। हिंदी को उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन को गति देने वाले अनिवार्य घटक के रूप में स्वीकार किया। वे हिंदी साहित्य सम्मेलन के सभापति भी रहे और उनके निर्देशन में दक्षिण भारत में हिंदी के प्रचार का बहुत कार्य किया गया। गांधी जी ने अंग्रेजी पत्रिका 'यंग इंडिया' के हिंदी संस्करण 'नवजीवन' का संपादन किया। उन्होंने 'हरिजन' पत्र हिंदी के साथ–साथ अन्य भी कई भाषाओं में निकाला।

गांधी जी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में हम उनके सिद्धांतों और विचारों का व्यावहारिक रूप देख पाते हैं। आत्मकथा पढ़ने के बाद गांधी जी की चारित्रिक दृढ़ता और कठोर परिश्रम का प्रभाव मर्मस्पर्शी है। हर समस्या का समाधान इच्छा शक्ति और मानवीय संदर्भ को केंद्र में रखकर संभव है। औद्योगिक विकास को संयत कर मानवीय पक्ष की उपेक्षा न करना ही जीवंतता का मूल आधार है। गांधीवादी सोच और व्यवहार इसी मानवीय पक्ष को सुरक्षित और समृद्ध करने का ठोस उपाय है। पर्यावरण से लेकर व्यक्तिगत जीवन तक यदि हम महात्मा गांधी को याद कर अपनाते रहेंगे तो उनकी धरोहर को कुछ पा सकेंगे। यह पत्रिका इसी दिशा में बूँद– बूँद सागर भरने का प्रयास है। इस प्रयास में हमारी कोशिश है कि हम नहीं गांधी जी बोलें ।

जिस–जिस से पथ पर स्नेह मिला, उस–उस राही को धन्यवाद।

जीवन अस्थिर अनजाने ही हो जाता पथ पर मेल कही।

सीमित पग डग लंबे मंजिल तय कर लेना कुछ खेल नहीं

मैं आभारी हूँ भारतीय उच्चायोग कोलंबो के उच्चायुक्त महोदय तरनजीत सिंह संधू और स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र की निदेशिका राजश्री बेहेरा जी की, जिनके मार्गदर्शन और निर्देशन में पत्रिका का विशेषांक प्रकाशित हो सका। हिंदी की सेवा में संलग्न सभी विद्वान साथियों के प्रति मैं कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। संपादन सहयोग हेतु अमानि विक्रमआरच्चि और नधीरा शिवंति की भी आभारी हूँ। प्रिंटिंग सहयोग के लिए नियो ग्रॉफिक्स के श्री बानुक सचिंत की और उन सभी महानुभावों की आभारी हूँ जिनका प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में हमें सहयोग मिला ।

नववर्ष की अनंत मंगलकामनाओं सहित

मोनिका शर्मा

डॉ. मोनिका शमा

सत्य की अराधना के लिए ही हमारा अस्तित्व, इसी के लिए हमारी प्रत्येक प्रवृत्ति और इसी के लिए हमारा प्रत्येक श्वासोच्छ्वास होना चाहिए।
– महात्मा गांधी

गांधी व्यक्ति नहीं विचार हैं

प्रो. बीना शर्मा
कुलसचिव, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्तूबर 1869 को पोरबंदर , गुजरात में हुआ। राजकोट में शिक्षा, कस्तूरबा से विवाह, गीता अध्ययन, सेवाग्राम आश्रम की स्थापना, भारत छोड़ो प्रस्ताव 1948 में दिल्ली में शांति स्थापना हेतु आमरण अनशन और 30 जनवरी 1948 को महाप्रयाण.....
–गांधी जीवन यात्रा के ये महत्वपूर्ण पड़ाव हैं।

'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' कहावत के दो उदाहरण याद आते हैं। बचपन में श्रवण कुमार और सत्यवादी हरिश्चंद्र का नाटक बाइस्कोप में देखकर गांधी जी माता–पिता की आज्ञा पालन और सत्य बोलने की आदत का जीवन भर निर्वाह करते हैं। ये दो प्रसंग उनकी जीवन यात्रा के वे निर्धारण बिंदु हैं जिनसे उनका चरित्र और व्यक्तित्व आकार लेता है। गांधी के तीन बंदरों की छाप भारत के हर छात्र वर्ण पर अमिट है–बुरा मत देखो, बुरा मत सुनो, बुरा मत कहो का आदर्श दूसरे की आलोचना न करने की सीख देता है। दूसरे के कार्यों में बुराई देखना, दूसरों की बुराई सुनना और जहाँ बुराई हो रही है वहाँ मन लगाकर सुनना मनुष्य मात्र की दुर्बलताएँ हैं। इन दुर्बलताओं पर विजय पाकर ही श्रेष्ठ मानव बना जा सकता है। सुलेख पर ध्यान देना, समय का ध्यान रखना, जीवन में पढ़े हुए सिद्धांतों को व्यवहार में लाना, देखने में भले ही छोटी बात लगे पर किसी भी व्यक्ति के जीवन को आकार देने में इन घटनाओं का विशेष महत्व हुआ करता है।

दुबले–पतले शरीर के, आँखों पर चश्मा, हाथ में लाठी लिए और एक धोती लपेटे गांधी बापू और महात्मा बन जाते हैं, राष्ट्रपिता कहलाते हैं। घटना इतने सहज ढंग से घटती है कि कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं लगता। बच्चों की ज़बान पर कविता की पंक्तियाँ चढ़ जाती हैं, वे गुनगुनाते हैं–
हम सब के थे प्यारे बापू, सारे जग से न्यारे बापू,
सबको गले लगाते बापू, सदा सत्य अपनाते बापू।

स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग का आग्रह अपने देश से जोड़ने की भावना की प्रबल अभिव्यक्ति है, खादी वस्त्र नहीं विचार है। राष्ट्र श्रेष्ठ नागरिकों से बनता है, श्रेष्ठ नागरिक बनने के लिए अच्छा विद्यार्थी होना ज़रूरी है। विद्यार्थी भविष्य की आशा है। इन्हीं नौजवान पुरूषों और स्त्रियों में से राष्ट्र के भावी नेता तैयार होते हैं अतः छात्रों को दलबंदी वाली राजनीति में कभी शामिल नहीं होना चाहिए। उन्हें राजनीतिक हड़तालें नहीं करनी चाहिए। गांधी जी के एकादश व्रत के पालन का परामर्श छोटे–बड़े सबके लिए है।

एकादश व्रत अर्थात् सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता निवारण, शरीर श्रम, सर्वधर्म सद्भाव और स्वदेशी के प्रति आग्रह।

मिथ्या ज्ञान से दूर रहना चाहिए क्योंकि मिथ्या ज्ञान हमको सत्य से दूर रखता है। योग चित्तवृत्ति निरोध को स्पष्ट करते हुए गांधी जी लिखते हैं–यह पातंजल योग ग्रंथ का पहला सूत्र है। जिसका अर्थ है हमारे दिल में उठती तरंगों पर अंकुश रखना, उसे दबा देना।

सत्य और अहिंसा गांधी जी के जीवन दर्शन का सार है। सत्य के बिना किसी वस्तु का अस्तित्व संभव नहीं है। अतः सत्य ही ईश्वर है । भौतिक मोहजाल और संबंधों के कारण मनुष्य सत्य को स्पष्ट देख नहीं पाता। इस जाल को काटने के लिए और संवेगों को संयत करने के लिए जिस शक्ति की आवश्यकता होती है वह अहिंसा, अंतःमन, वचन, कर्म और आत्मा से अहिंसा को स्थान मिलना चाहिए। अहिंसा का अर्थ मात्र हिंसा न करना नहीं है । इसके साथ ही बुरे तथा निरर्थक विचार मन में न लाना, द्वेष, घृणा और अहंकार से दूर रहना भी है।

आवश्यकता से अधिक संग्रह न करना, दूसरों का शोषण न करना, निर्भय रहना, अहिंसा के ही रूप हैं। समाज सेवा प्रत्येक मनुष्य का सबसे बड़ा धर्म है और अस्पृश्यता निवारण सबसे बड़ा है। गांधी जी ने भारत में रामराज्य का स्वप्न देखा – दैहिक, दैविक भौतिक तापा रामराज्य नहिं कहुहि व्यापा।

उन्होंने नैतिकता पर बल दिया। उनका मानना था, नैतिक व्यक्ति स्वार्थरहित होकर कार्य करता है। मानव जीवन का मुख्य उद्देश्य आत्मज्ञान प्राप्ति है। आत्मज्ञान से ही मुक्ति मिलती है। मुक्ति की प्राप्ति सन्यास से नहीं वरन् धर्म, कर्म, ज्ञान के द्वारा संभव है। गांधी जी ने सच्ची शिक्षा सा विद्या या विमुक्तये को माना। मुक्ति का अर्थ आत्म साक्षात्कार , आत्मानुभूति, ईश्वर दर्शन और सत्य अहिंसा के गुणों से ओतप्रोत होना है। शिक्षा को मनुष्य के सर्वांगीण विकास का साधन माना। शिक्षित व्यक्ति स्वावलंबी होता है। वह श्रम के महत्व को समझता है। शिक्षा व्यक्ति का चरित्र निर्माण करती है।

नैतिक मूल्यों के विकास के लिए आध्यात्मिकता ज़रूरी है। आध्यात्मिकता में प्रार्थना का सर्वोपरि स्थान है। गांधी जी सभाओं में रामधुन गाते थे–
ईश्वर अल्ला तेरो नाम, सबको सन्मति दे भगवान।
रघुपति राघव राजा राम, पतित पावन सीता राम।

जीवन जीने के लिए सत्य, अहिंसा, प्रेमभाव, प्रार्थना, सेवाभाव, मानवधर्म सब आवश्यक है। गांधीगिरी शब्द श्रेष्ठ आचरण के संदर्भ में प्रचलित है। इन्हीं कारणों से गांधी जी अमर हैं।
दे दी हमें आज़ादी बिना खड्ग बिना ढाल
साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।

हम स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभावों के लिए अपने दरवाजे–खिड़की खुले रखें पर अपनी बुनियाद पर कायम रहें।
– महात्मा गांधी

विश्व हिंदी सम्मेलन में मॉरिशस के कार्यकारी राष्ट्रपति परम शिव पिल्लई वयपुरी, भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, गोवा की गवर्नर मृदुला सिंह के साथ श्रीलंका के सम्मानित हिंदी प्राध्यापक ब्रसील नागॉडवितान

विद् गांधी जी इन सीलोन : गांधी जी के साथ सीलोन में

महादेव देसाई की पुस्तक के महत्वपूर्ण अंशों का भावानुवाद

महात्मा गांधी : साधारण शब्दों में असाधारण विचारक

प्रो. दुर्गा प्रसाद सिंह
विजिटिंग प्रोफेसर (हिंदी चेयर,आई.सी. सी. आर.)
कॅलणिय विश्वविद्यालय, ,श्री लंका

कहते हैं कि वर्तमान और भविष्य के बीच की खाई बेहद गहरी होती है इसके पार वे ही देख पाते हैं जो असाधारण होते हैं। गाँधी ऐसे ही महान व्यक्तित्व के महापुरुष थे। उनकी महानता का अंदाज लगाना आसान इसलिए नहीं है क्योकि साधारण शब्दों में छिपी असाधारण असाधारण दृष्टि को डिकोड करने के लिए भी गहरी समझ की जरूरत होती है। महात्मा गाँधी कि इसी गहरी समझ को शब्द देते हुए महान वैज्ञानिक अलबर्ट आइंस्टाइन ने कहा था कि "आने वाली पीढियां मुश्किल से विश्वास कर पाएंगी कि हाड़ मांस से बना एक व्यक्ति वास्तव में धरती पर अवतरित हुआ था" दरअसल गाँधी सार्वजनिक जीवन में एक राजनीतिक के तौर पर देखे जाते हैं पर वे हमेशा मनुष्य और समाज की मुकम्मिल समझ के हामी थे। वे राजनीति को धर्म, दर्शन, नैतिकता और संस्कृति के जटिल ताने बाने में बन कर देखते थे। इसकी वजह संभवतः यह थी जीवन के सभी आयाम जितने मनुष्य की वैयक्तिकता से जुड़े हैं उतने ही समाज कि सामूहिकता से भी जुड़े हैं। यदि दोनों के बीच की संगति को छोड़ दे तो एक द्वन्द्व पैदा होता है। यह अंतर्द्वंद्व न तो व्यक्ति और न ही समाज को रचनात्मक दिशा दे पाता है। गाँधी के राजनीतिक हथियार बाहरी प्रतिरोध नहीं बल्कि बुनियादी परिवर्तन की आकांक्षी थे। वे अकसर कहा करते थे कि जीवन में जितना लक्ष्य महत्वपूर्ण है उतना ही उस लक्ष्य को पाने का मार्ग भी महत्वपूर्ण है। शायद ही किसी राजनीतिक व्यक्तित्व ने बीसवीं सदी की दुनियां को उतना प्रभावित किया होगा जितना महात्मा गांधी ने। उनकी नजर पूरी दुनिया पर होती थी और वे तमाम मुद्दों पर अपनी एक समझ रखते थे। १९३७ में सीलोन की अपनी यात्रा में गाँधी देश के तमाम हिस्सों में गए। इस यात्रा में उनके भाषणों उनके विचार कि सरलता और गहरी दृष्टि हर जगह दिखती है। ये भाषण इस मायने में भी महत्वपूर्ण हैं कि आज भी ये कितने प्रासंगिक और गहरी समझ लिए हैं।

आनन्दा कॉलेज 15.11.1927, कोलम्बो : 'खादी एक वस्त्र नहीं विचार'

मुझे इस बात की बेहद खुशी है कि कोलम्बो और सीलोन यात्रा ने मुझे आपसे मिलने का मौका दिया। मैं जहाँ भी जाता हूँ मुझे स्कूल के बच्चो से मिल कर बेहद खुशी होती है। सीलोन में अधिकांश बच्चे बुद्ध की शिक्षाओं से प्रभावित हैं। बुद्ध वे महान विचारक हैं जिन्होंने हमें जीवन में ना सिर्फ सही रास्ता दिखाया बल्कि उस रास्ते पर चलने का तरीका भी दिया।

बुद्ध की सीख का पहला सूत्र है सत्य। यह सत्य सोचने , बोलने और सत्य के मार्ग पर चलने में निहित है। उनका दूसरा सूत्र सभी के प्रति प्रेम है। महात्मा बुद्ध सभी जीवो के प्रति दया और करुणा के इतने गहरे भाव से भरे थे की उन्होंने न सिर्फ मनुष्य बल्कि सभी जीवों से प्रेम की बात की। उन्होंने हमें जीवन में पवित्रता के महत्व की सीख दी। इसलिए मैं आप सभी छात्रों को याद दिलाना चाहता हूँ कि यदि आप सत्य करुणा और सभी जीवो के प्रति स्नेह के भाव से नहीं भरे हैं तो इस संस्थान में आप की शिक्षा अधूरी है। क्या आपमें से कोई बता सकते हैं कि बुद्ध का जन्म कहाँ हुआ था शायद आप कहें कपिलवस्तु। मैं विनम्रता से एक बात साँझा करना चाहता हूँ कि बुद्ध के देश के होने के नाते आप मेरे ऋणी हैं। वो ऋण इस बात का है कि जिस देश में उन्होंने अपने पवित्र पाँव रखे जीवन के वास्तविक सुख का रास्ता दिखया उसमे लाखों लोग गरीबी और दुःख का जीवन जी रहे हैं। ऐसा इस लिए हुआ क्योंकि हमने अपने प्राचीन हथकरघा जैसे उद्योगों को उपेक्षित कर दिया। यदि भारत में आज लोग हथकरघे से बने खादी कपड़ों को पुनः अपना ले तो बहुत कुछ बदल सकता है। हाथ से बना और बुना खादी एक वस्त्र नहीं विचार है जो लाखो लोगों के जीवन में उजाला और खुशियाँ ला सकता है। यदि आप बुद्ध कि करुणा के संदेश को सही मायने में लौटाना चाहते हैं तो आप को खादी पहनना चाहिए। जैसा कि मैं आप सभी को बच्चों को देख रहा हूँ आप सभी ने निश्चित रूप से सीलोन या कोलंबो में बने वस्त्र नहीं पहने हैं। यदि आप खादी अपनाते हैं तो आप भारत के करोड़ों बुनकरों कि बदहाली को न सिर्फ दूर करेंगे बल्कि बुद्ध के करुणा के दूसरे संदेश को सही मायने में आगे ले जायेंगे। यही सही मायने में बुद्ध के संदेश को जीवन में उतारने जैसा है। यदि आप में बुद्धिमत्ता के साथ साहस है तो आप निश्चित रूप से खादी के संदेश को अपने माता–पिता और शिक्षक के साथ सांझा करेंगे। आप कहिएगा कि भारत से गाँधी नाम का एक अपरिचित आदमी ने खादी वस्त्र को बुद्ध के सन्देश से ऐसे जोड़ रहा था। मुझे आश्चर्य नहीं होगे कि वे आपके एक एक शब्द का समर्थन करेंगे। आपके शिक्षकों और आप ने भारत के करोड़ों जरुरतमंदों की मदद के लिए जो पैसे मुझे दिए हैं उसके लिए शुक्रिया वे कि मदद के लिए हैं। खादी अपनाना आज एक शुरुआत का कदम है जिसे आप ने आज लिया है।

ईश्वर आप सभी की मदद करे।

नालंदा विद्यालय, कोलंबो 15.11.1927 : बुद्ध के सिद्धांत का रूपायन खादी

आज आपके संस्थान में आकर मुझे गर्व हो रहा है क्योंकि लम्बे अरसे से यहाँ आने में मेरी दिलचस्पी रही है। इससे पहले आनंदा कॉलेज में भी मैंने यही नजरिया छात्रों के सामने रखा था। बुद्ध ने जीवन के जो सिद्धांत और रास्ता दिखाया उसकी सार्थकता उस मार्ग पर चलने में है। वरना उसकी कोई उपयोगिता नहीं है। सिद्धांत और कर्म का फासला तय करने में ही जीवन कि सार्थकता निहित है। इसके बिना हमारी शिक्षा अधूरी और निरर्थक है। बुद्ध कि शिक्षा का मूल है सही मार्ग उचित वाणी सही विचार और सही कर्म। उन्होंने हमें ऐसी करुणा का मार्ग दिखया जो बेहद विशुद्ध है और ये करुणा मनुष्य के परे सभी जीवों के प्रति करुणा में रूपायित होती है। यह करुणा विकसित होकर असीम प्रेम में रूपायित होती है। बुद्ध ने करुणा का यह संदेश सबसे पहले भारत में दिया। पर यह दुर्भाग्य है कि उसी भारत में आज तमाम लोग अपनी आजीविका से वंचित होकर दुःख और पीड़ा से गुजर रहे हैं। यदि आप खादी को अपनाएंगे तो बुद्ध की शिक्षा करुणा और कर्म का यह जीता जगता उदाहरण होगा। यहाँ सीलोन में अधिकाँश लोग विदेशी वस्त्र पहनते हैं। जिसकी परिणति स्वदेशी आजीविका के खत्म होने में होती है। परिणाम स्वरुप लाखों लोगों को गरीबी और भूखमरी की पीड़ा से गुजरना पड़ता है। अगर हम स्वदेशी अपनाए तो हम बुद्ध के करुणा और प्रेम के सिद्धांत को साकार कर रहे होंगे। मेरे अनुवादक के गर्व से कहा कि उन्होंने जो कपडे पहन रखे हैं वे स्वदेशी हैं। मैं भारत के खादी से पहले सीलोन के खादी कि वकालत करूँगा और यदि आप बुद्ध के सिद्धांतों को साकार करना चाहते हैं तो आप को स्वयं इसकी पहल करनी चाहिए। पर इससे बेहतर क्या हो सकता है

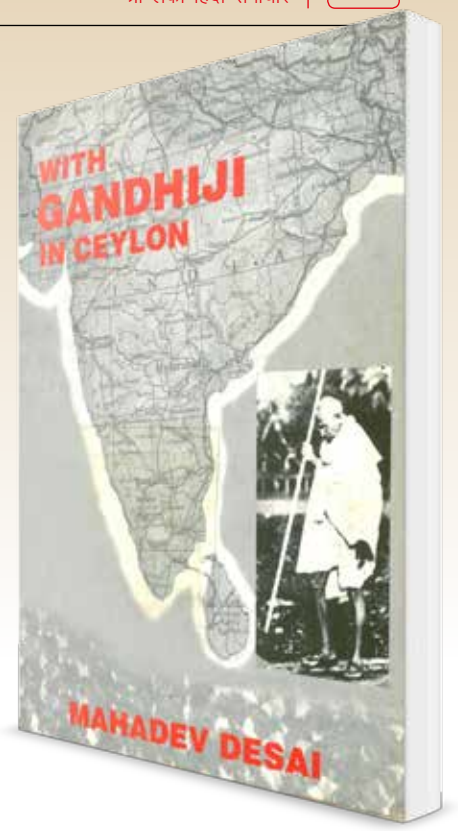

कि आप स्वयं खादी वस्त्र अपना कर स्वयं को एक बेहतरीन उपहार दे। बुद्ध के कदमों पर चलने का उपहार। ऐसा कर के आप न सिर्फ भारत बल्कि दुनिया के आगे एक उदाहरण पेश करेंगे, पर इसकी शुरुआत आप से ही होनी है क्योंकि जो परिवर्तन हम दुनिया में देखना चाहते है उसकी शुरुआत खुद से होनी चाहिए।

जहाँ शुद्ध प्रयत्न है वहाँ भिन्न जान पड़ने वाले सब सत्य एक ही पेड़ के असंख्य भिन्न दिखाई देने वाले पत्तों के समान हैं।

– महात्मा गांधी

स्वस्थ तन–मन : उन्नत समाज

डॉ. मोनिका शर्मा
हिंदी चेयर
स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो,श्री लंका

नागरथर समिति, कोलंबो 13.11.1927

अनजान देश में कैसे करें व्यवहार

मित्रों, आप सब ने जो अत्यंत व्यावहारिक ढंग से मदद के लिए पैसे दिए उसका शुक्रिया। मैं स्वयं को पुनः जैसे चेट्टीनाड़ में महसूस कर रहा हूँ। इस दोपहर चेट्टीनाड़ की सुखद याद मेरे सम्मुख सजीव हो उठी है। उनकी उदारता को मैं कभी भुला नहीं सकता और आप यहाँ कोलंबो में उसी को दोहरा रहे हैं जो मैंने चेट्टीनाड़ में देखा। मुझे यही तसल्ली है कि यह सब 'दरिद्र नारायण' के हित के लिए किया जा रहा है और मैं स्वयं को लाखों अकिंचन भारतीयों के विनम्र ट्रस्टी के रूप में देख रहा हूँ, मुझे इन उपहारों को स्वीकारने में कोई दीनता या शर्म नहीं महसूस हो रही, बल्कि मैं आपकी अनुकंपा और उदारता को देख अधिक के लिए प्रार्थना करने को प्रेरित हो रहा हूँ।

कोई संस्था कितनी भी समृद्ध और उदार क्यों न हो लाखों 'दरिद्र नारायण' की क्षुधा शांत नहीं कर सकती। इसलिए यदि आप में से किसी ने कंजूसी से दान दिया है तो मैं 'दरिद्र नारायण' की ओर से पुनः दिल खोलकर दान देने की प्रार्थना करता हूँ। भारत में हों या भारत से बाहर समृद्ध भारतीयों के लिए इससे बेहतर कोई निवेश नहीं हो सकता और अपनी उदारता को केवल ध न के दान तक ही सीमित न रखिए। यदि आप इन लाखों गूँगे लोगों से जुड़ना चाहते हैं तो आप उनके पवित्र हाथों से बनी खादी ज़रूर पहनिए। यदि आप इस दृष्टि से सोचेंगे तो अपने जीवन को पवित्र करने के लिए आपको, अपने लिए लाखों गूँगों से निरंतर जुड़ना अनिवार्य लगेगा। जहाँ भी सच्चा प्रेम होता है, वहाँ दान–पुण्य होता है, वहाँ व्यक्तिगत पवित्रता होती है, उस समाज में तुरंत एकजुटता उत्पन्न होती है। आप देखेंगे कि पवित्रता की तरफ आपका एक कदम आपको अगले की ओर ले जाएगा।

आप उस भूमि पर हैं जिसे विदेश मानी जा सकता हैं। भौगोलिक और आधिकारिक तरीके से, सीलोन भारत का भाग नहीं माना जाता है। आप, इस मेहमानों का स्वागत करने वाली भूमि पर रहने वाले व्यापारी हैं, और आपसे अपेक्षा की जाती है कि यहाँ की स्वदेशी आबादी के साथ आदर्श–ईमानदार व्यवहार करेंगे। आपके व्यवहार से ही लाखों भारतीयों को पहचाना जाएगा। इसलिए मैं उम्मीद करता हूँ कि इस निष्पक्ष द्वीप के लोगों के साथ आपका लेन–देन न्यायपूर्ण हो और हर तिरस्कार से मुक्त है। आप तराजू पूर्णतः सच्चे और खाते एकदम सही रखिए। मुझे उम्मीद है इस द्वीप की हर औरत को आप बहन, बेटी या माँ के रूप में देखते हैं। संपत्ति का स्वामित्व हमें मतिशून्य न बनाए। जिनके बीच रह कर यह वरदान के रूप में कमाई गई है उनके प्रति हममें अधिक जिम्मेदारी का भाव लाए।

ईश्वर आपका कल्याण करे।

धर्मराज महाविद्यालय, कैंडी 18. 11. 1927 : व्यक्तिगत शुद्धता के लिए आह्वान

यह मेरा सौभाग्य है कि मैं दुनिया में जहाँ भी जाता हूँ घर–सा महसूस करता हूँ या स्वयं को ऐसा ही महसूस करवाता हूँ, यदि मैं यह न कर सकता तो शायद बिना आत्महत्या के प्रयास के ही मैं बहुत पहले ही मर चुका होता। लेकिन मैं दुगना घर सा महसूस करता हूँ जब मैं अपने पारसी मित्रों को देखता हूँ। आप वास्तव में यह समझ नहीं पाएँगे। शायद आप यह भी सोचेंगे कि मैं मज़ाक कर रहा हूँ। यह मज़ाक नहीं। यह गंभीर है क्योंकि मैं दक्षिण अफ्रीका और भारत में पारसियों के निकट संपर्क में रहा हूँ और व्यक्तिगत रूप से उनसे सदा प्रेम का उपहार ही पाया है। अब भी आप नहीं जानते लेकिन

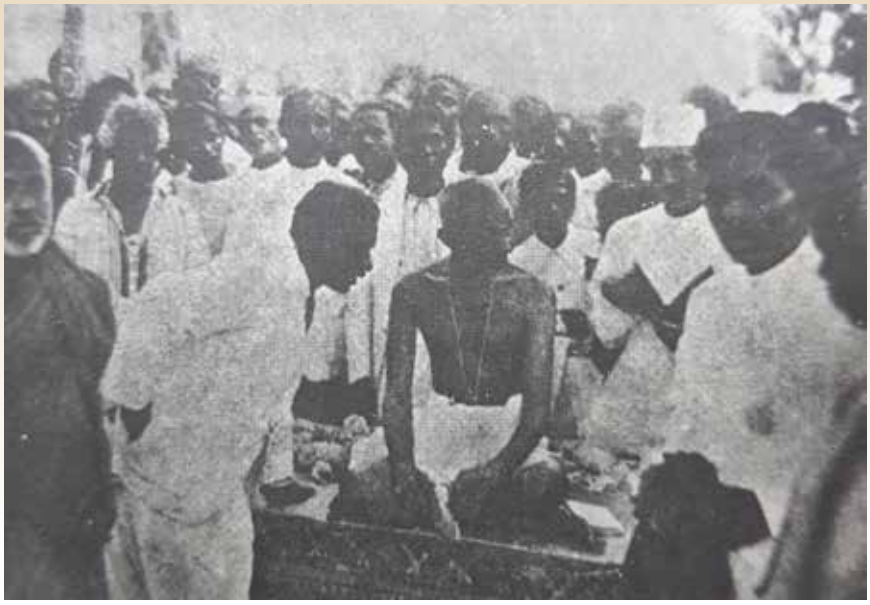

मुझे यह बताते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि मेरे साथ सर्वश्रेष्ठ काम करने वालों में कुछ पारसी हैं, और वे भारत के 'ग्रेंड ओल्ड मैन' की तीन पोतियाँ हैं।

पर मैं आपको अपनी व्यक्तिगत और पारिवारिक बातों में नहीं लगाना चाहता। मैं आपको इस धनराशि के लिए बहुत अधिक धन्यवाद देना चाहता हूँ और आपके यहाँ आने का अवसर पाकर मुझे अच्छा लगा।

जैसा कि मैंने ट्रिनटी कालेज के लड़कों को थोड़ी देर पहले कहा आपकी शिक्षा बिलकुल व्यर्थ है यदि वह सत्य और निर्मलता के ठोस आधार पर निर्मित नहीं है। यदि आप लड़के अपने जीवन की व्यक्तिगत निर्मलता के बारे में सचेत नहीं हैं, विचार, वाणी और कर्म से निर्मल नहीं हैं तो आप भटके हुए हैं भले ही आप श्रेष्ठ पूर्ण पंडित बन जाएँ।

मुझे कहा गया है कि मैं एक चीज़ की ओर आपका ध्यान आकर्षित करूँ।

निर्मलता सर्वप्रथम निर्मित होती है, निर्मल हृदय का स्वामी होने से, लेकिन जो हमारे हृदय में है वही हमारे बाहरी कार्य और बाहरी व्यवहार में प्रकट होता है। वह लड़का जो अपना मुख शुद्ध रखना चाहता है कभी अपशब्द नहीं बोलेगा । यह बिलकुल स्पष्ट है। वह ऐसा कुछ भी मुख में नहीं लाएगा जो उसकी प्रज्ञा को ढक ले, उसकी प्रज्ञा को ढक कर उसके मित्रों की हानि करे।

भारतीय जनशक्ति के लिए समुद्र में से चुल्लू–भर बूंदें उड़ गई तो वह सूख नहीं जाता। उसकी शक्ति को कोई नहीं मिटा सकता।
– महात्मा गांधी

संघर्षशील लाखों
विवेकानंद समाज कोलंबो : संघर्षशील लाखों कें साथ सम्पर्क

डॉ शीरीन कुरैशी
पूर्व हिंदी चेयर, भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो
वर्तमानः अध्यापिका इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

मैं आपको आपकी प्रशंसा और संशोधन के लिए धन्यवाद प्रदान करता हूँ। थोडे से समय के दौरान मैंने आपके सामाजिक कार्यों की रिपोर्ट पर एक नजर डाली और आपको आपकी कई गतिविधियों पर बधाई देना चाहता हूँ। विवेकानंद यह नाम एक ऐसा प्रभावशाली नाम है जिसने कि भारतीय जीवन पर एक अविश्वसनीय प्रभाव डाला है। वर्तमान समय में भारत के कई हिस्सों में उनके नाम के समाज बने हुए हैं और यह राम कृष्ण मिशन की कई शाखाओं के अलावा है। लेकिन मुझे लगता है कि मुझे आपको इस बैठक में लंबे समय तक नहीं रखना चाहिए। वहाँ अधीर भीड बाहर इंतजार कर रही हैं। मैं वर्तमान क्षणों में यही कहूँगा कि मैं इस समाज के लिए हर समृद्धि की कामना करता हूँ और क्या सुझाव दे सकता हूँ कि आपकी गतिविधियाँ तब तक निष्क्रिय नहीं होंगी जब तक कि आप इन चीजों को जोडते रहेंगे जो दरिद्र नारायण(गरीबों में भगवान का अवतार) को सेवा प्रदान करती है।

मेरे लिए आपका चरखा आपकी सराहना का संदेश हैं। अगर विवेकानंद आपके समाज का नाम है, तो आप में संघर्षशील लाखों भारतीय को अनदेखा करने का साहस नहीं हैं।

यह निवेदन करने में मुझें कोई हिचकिचाहट नहीं है कि भारत में रहने वाले हो या अप्रवासी भारतीय हो उन्हें स्वयं को अपनी मातृभूमि के लाखों संघर्षशील के बीच बंधन का प्रतीक बनाने के लिए खींचना चाहिए।

मैं कहना चाहती हूँ मेरे दाहिनी और बैठी बहनें और कोलंबो में रहने वाले समृद्ध भारतीय लोग छः साल तक अगर चरखे की निरंतर गतिविधि से जुडे रहे तो खद्दर वाली उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं। संघर्षशील लोग मातृभूमि की सेवा कर सकते हैं।

बापू गांधी आपको प्रणाम!

सेवानिवृत्त प्रो॰बंडार मेणिके विजेतुंग
हिंदी विभाग,
श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय,
श्री लंका

बहुत धन्य है बापू गांधी –हम प्रणाम आपको करते हैं
आपने अफ्रीका में जाकर सत्याग्रह आंदोलन किया ।

बापू की ताकत को अंग्रेज़ों ने भी –सिर झुकाकर मान लिया
सत्य, अहिंसा, करूणा से भारत का उद्धार किया ।

बापू ने अपने विक्रम बल से –जुल्मों को हरा दिया
वहाँ शांति हो जाने पर –बापू वापस भारत आये ।

खरीदना नहीं विदेशी चीज़ें –ऐसे बापू ने नारे लगाये
देशी माल से काम चलाओ –अपने धन से लाभ उठाओ ।

भारतवासी चरखे चलायें घर–घर निर्धन पैसे कमायं
बहुत धन्य है; महात्मा गांधी–आप ही हमारे नेता गांधी ।

हे बच्चों! राष्ट्रपिता अपने देश के निर्माता
आरती बापू की जय हे! भारत भाग्य विधाता ।

धर्मपत्नी कस्तूरबा –उनकी मनुष्यता को पहचाना
लोहा उनका फिर तो दुनिया भर ने माना।

गांधी जी मालिगाकंद मंदिर, कोलंबो में

ब्रसील नागॉड वितान
हिंदी प्राध्यापक
सबरगमुव विश्वविद्यालय, श्री लंका

भगवान के नियम शाश्वत और अपरिवर्तनीय हैं और स्वयं भगवान से पृथक नहीं हैं। उनकी पूर्णत्व की स्थिति अपरिहार्य है। अतः महात्मा बुद्ध का भगवान में अविश्वास था और उन्हें मात्र नैतिक नियमों में विश्वास था, भगवान के विषय में इस महा भ्रम के कारण ही महान शब्द 'निर्वाण' की उचित समझ के बारे में भी भ्रम उत्पन्न हुआ। 'निर्वाण' पूर्णतः विलुप्त होना नहीं है। जितना कि अब तक मैं समझ पाया हूँ महात्मा बुद्ध के जीवन का मूल तथ्य 'निर्वाण', हमारे भीतर उस सब का लुप्त होना है जो तुच्छ है, वह सब जो हमारे भीतर नकारात्मक है, वह सब जो हमारे भीतर भ्रष्ट है या भ्रष्ट हो सकता है। 'निर्वाण' कब्र की काली, मृत शांति की तरह नहीं है, अपितु जीवंत शांति है, आत्मा का सजीव सुख है जो स्वयं के बारे में सचेत है, यह सचेतनता उस असीम के हृदय में अपना स्थान खोज लेने के संदर्भ में है।

क्षणिक देह द्वारा शश्वत धर्म का साक्षात्कार संभव नहीं होता। – महात्मा गांधी

150वें वर्ष गांधी जी को समझते और अपनाते हुए 'स्वच्छता ही सेवा' पर विद्यार्थियों के विचार

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र में सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धासुमन अर्पित किए

गांधीजी: सत्याग्रह और अहिंसा के पुजारी

डॉ. गंगाधर वानोडे
विभागाध्यक्ष, अंतरराष्ट्रीय हिंदी शिक्षण विभाग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा–282005

गांधीजी सीधी प्रकृति के थे मतलब सीधे–साधे प्रवृत्ति वाले थे। डरपोक भी थे तथा पढ़ने में बहुत कुशाग्र बुद्धि के नहीं थे। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अल्फ्रेड हाईस्कूल राजकोट से शुरू हुई। 18 वर्ष की आयु में हाईस्कूल की परीक्षा पास करने के पश्चात् एक पारिवारिक मित्र की सलाह पर 1888 में गांधीजी को वकालत पढ़ने के लिए इंग्लैंड भेजा गया। बैरिस्टर पास करने के बाद 1891 को वे भारत लौट आए तथा राजकोट में वकालत शुरू की। सन 1893 में वे एक मुस्लिम व्यापारी अब्दुल्लाह के मुकदमे में पैरवी के लिए दक्षिण अफ्रिका के नेटाल में पहुँचे।

गांधीजी प्रथम भारतीय बैरिस्टर थे जो दक्षिण अफ्रिका पहुँचे। उस मुकदमे में उन्होंने दोनों पक्षों के बीच समझौता करा दिया। दक्षिण अफ्रिका में गांधीजी को कई कटु अनुभवों का सामना करना पड़ा। उन्हें वहाँ पगड़ी उतारने को कहा गया। उन्होंने अस्वीकार किया। प्रिटोरिया जाते समय उनके पास रेल का प्रथम श्रेणी का टिकट होने के बावजूद रेल के प्रथम श्रेणी के डिब्बे से धक्के मारकर उतार दिया गया। ऐसी कई घटनाएँ हैं। दक्षिण अफ्रिका में गांधीजी ज़्यादा दिन नहीं रुकना चाहते थे, परंतु वहाँ स्थित लोगों पर हो रहे रंगभेद के अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष के लिए तथा भारतीयों को मताधिकार से वंचित करने वाला विधेयक पारित होने जा रहा था, उस विधेयक के विरूद्ध आंदोलन का नेतृत्व करने के लिए वहाँ के भारतीयों ने प्रार्थना करने पर वे वहाँ कुछ दिन रुके। तथा 20 वर्षों तक लगातार संघर्ष करते रहे। वे जनवरी 1915 में भारत लौटे।

गांधीजी भारतीयों से संबंधित समस्याओं एवं शिकायतों को लेकर विधानमंडल, गृहसचिव और ब्रिटिश संसद को अनेक ज्ञापन भेजते रहे। तब तक गांधीजी को अँग्रेज़ों की नेक नीयत पर कुछ विश्वास था। वे भारतीयों को संगठित करने का लगातार प्रयत्न करते रहे। इसके लिए 'नेटाल भारतीय कॉंग्रेस' का गठन किया गया और 'इंडियन ओपीनियन' नामक अख़बार निकालना शुरू किया। किंतु 1906 तक गांधीजी का भ्रम दूर हो गया और उन्होंने एक नया प्रयोग शुरू किया जिसे 'सत्याग्रह आंदोलन' कहते हैं। सर्व प्रथम आंदोलन उस क़ानून के खिलाफ शुरू हुआ, जिसके तहत् हर भारतीय को पंजीकरण प्रमाण–पत्र लेना जरूरी था। सत्याग्रह के दौरान कई सारी विपत्तियों का सामना करना पड़ा। नेटाल सरकार तरह–तरह के दावपेच तथा भारतीयों पर अत्याचार, उन्हें देश से बाहर निकालने का षड्यंत्र रचा। वहाँ बसे भारतीयों पर तीन पौंड का कर लगाया गया। मालिकों ने मज़दूरों के मकानों में बिजली, पानी देना बंद कर दिया, आदि। इधर भारत में गोखले ने घूम–घूम केर अत्याचार के खिलाफ जनमत तैयार किया। लार्ड हार्डिंग ने भी इन अत्याचारों की कटु अलोचना की। अंत में लार्ड हार्डिंग, गांधीजी, गोखले, सी.एफ.एंड्रयूज़ से कई बार लेखी बातचीत के बाद दक्षिण अफ्रिका की सरकार ने भारतीयों की मुख्य माँगे मान ली। एक समझौते के तहत् तीन पौंड के कर और पंजीकरण प्रमाण–पत्र क़ानून समाप्त कर दिए गए। भारतीय रीति–रिवाज़ से विवाह करने की छूट मिल गई तथा भारतीय अप्रवासियों की अन्य कठिनाइयों पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने का आश्वासन दिया गया। इस प्रकार गांधीजी का प्रथम सत्याग्रह आंदोलन सफल रहा।

जब जनवरी 1915 में गांधीजी भारत वापस आए तो गर्मजोशी से उनका स्वागत किया गया। वे हर किसी के चहेते बने क्योंकि गोखले ने दक्षिण अफ्रिका के संघर्षों के समर्थन में जनमत जागृत करते समय गांधीजी के बारे में भारतीयों को काफी परिचित करा दिया था। कुछ दिनों बाद गांधीजी ने कई समस्याओं का निराकरण करने के लिए अलग–अलग प्रकार के आंदोलन किए जैसे– चंपारण आंदोलन, अहमदाबाद मिल हड़ताल, खेड़ा आंदोलन आदि।

गांधीजी अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने अलग–अलग क्षेत्रों में कार्य किया। उनमें सर्वोदय, स्वराज, स्वदेशी, न्यासिता, धर्म एवं राजनीति, सत्याग्रह, राष्ट्रवाद, छूआछूत, महिलाओं की समस्या और उनका जागरण, आदि। वे मानते थे कि स्त्री अहिंसा का अवतार है।

'सत्याग्रह' शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा के दो शब्दों– सत् तथा आग्रह की संधि से हुई है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है– सत्य के लिए आग्रह करना। सत्य पर अड़े रहना अथवा सत्य का अनुसरण करना।

यह भी कहा जा सकता है कि सत्याग्रह असत्य तथा अन्याय के विरूद्ध आंदोलन तथा संघर्ष का नाम है। गांधीजी की मान्यता थी कि, सत्याग्रह नैतिक रूप में सक्षम, सक्रिय व सतर्क लोगों के द्वारा किया जानेवाला संघर्ष है, न कि असहाय, कायर अथवा डरपोक लोगों का। गांधीजी के सत्याग्रह का आधार सत्याग्रही की नैतिक शक्ति है। उसकी नैतिकता के मूल्यों के प्रति जागरूकता तथा उनमें आस्था वैसी ही होनी चाहिए, जैसी पारंपारिक हिंसक युद्ध में योद्धा की शारीरिक शक्ति तथा अस्त्र–शस्त्र की शक्ति के प्रति होती है। नैतिक शक्ति शारीरिक शक्ति से श्रेष्ठ होती है। गांधीजी ने हिंदू धर्मग्रंथों में उल्लेखित आत्मपीड़न, आत्मत्याग अथवा आत्मबलिदान को सत्याग्रह की आत्मा का नाम दिया है। भारतीय संस्कृति की मान्यता है कि हर व्यक्ति सत्य के रास्ते पर चलने व असत्य के विरूद्ध संघर्ष करने के लिए, यदि जरूरी हो, तो अपने आप को कष्ट दे, न कि अपने विरोधी को। अपना बलिदान देने के लिए सदैव तत्पर रहे, न कि अपने विरोधी का बलिदान लेने के लिए। नैतिक नियम भी यही है कि हम अपनी गलतियों के लिए अपने आपको दंडित करें, न कि अपने विरोधियों को। इसलिए गांधीजी ने अपनी 'हिंद–स्वराज' नामक पुस्तक में कहा है कि, "आत्म–बलिदान पर–बलिदान से श्रेष्ठ है।" सत्याग्रह सोचने और जीने का एक ऐसा मार्ग है जो हमें आत्म–त्याग व कई न्यायोचित तथा अहिंसक साधनों के द्वारा सत्य तथा न्याय के रास्ते पर प्रशस्त करता है; असत्य, अन्याय तथा बुराइयों पर वार करता है तथा विरोधी अथवा तथाकथित शत्रु का हृदय परिवर्तन करके उसे पहले सहपक्षी तथा अंत में मित्र बना देता है। जेम्स लूथर एडम्स ने गांधीजी के सत्याग्रह को एक ऐसा सिद्धांत व साधन माना है, जिसमें छह विशेषताएँ है–

(1) अहिंसा पर आधारित;
(2) जो न्याय व आपसी सहयोग की भावना से प्रेरित हो;
(3) जिसका प्रयोग एक अंतिम अस्त्र के रूप में किया जाए;
(4) गोपनीयता का अभाव;
(5) जिसमें सत्याग्रही क़ानून की अवहेलना के लिए प्रस्तावित दंड को सहर्ष स्वीकार करने के लिए तत्पर हो;
(6) किसी ऐसी नीति व क़ानून विशेष का उल्लंघन जो मानवीय क़ानून से ऊपर दैवीय अथवा नैतिक क़ानून के लिए हो;

अतः गांधीजी का सत्याग्रह साध्य व साधनों के बीच स्थायी एकरूपता स्थापित करता है।

गांधीजी के अनुसार सत्याग्रह के तीन मूलभूत सिद्धांत निम्नलिखित है –

(अ) अहिंसा;
(ब) साध्य और साधन की एकरूपता में विश्वास;
(क) कर्म एवं कर्ता में भेद.

अहिंसा–

हिंसा के विरुद्ध संघर्ष, हिंसा की विपरीत ताकत, अहिंसा के द्वारा होनी चाहिए। अहिंसा ही हिंसा का अंत कर सकती है, उसे कम कर सकती है। हिंसा का जवाब यदि हिंसा से दे दिया जाएगा तो उससे हिंसा बढ़ेगी ही, कम नहीं होगी। इसी आधार पर के. एल. श्रीधरानी ने गांधीजी के सत्याग्रह को 'हिंसा विहीन युद्ध' की संज्ञा दी।

साध्य और साधन की एकरूपता में विश्वास–

गांधीजी को जहाँ अहिंसा में आस्था थी, वहीं पर वह साध्य और साधन की एकरूपता में भी विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि नेक साध्यों की प्राप्ति नेक साधनों के द्वारा ही हो सकती है। वास्तव में, साध्य साधनों की अंतिम कड़ी अथवा सीढ़ी का नाम ही है। वे अक्सर कहा करते थे कि बुरे कर्मों के नतीजे बुरे होते हैं, और अच्छों के अच्छे। कहावत है– 'जैसी करनी, वैसी भरनी' या 'जैसा बोओगे, वैसा पाओगे'। इसीलिए गांधीजी साधनों को साध्य से अलग नहीं करते हैं, क्योंकि उनके अनुसार साध्य साधनों की अंतिम कड़ी का ही नाम है।

कर्म एवं कर्ता भेद–

गांधीजी ने कर्म और कर्ता में भी समुचित विभेद किया। उन्होंने अपने संघर्ष का लक्ष्य हमेशा बुराई को बनाया, न कि बुरे अथवा बुराई करने वाले को। उनकी मान्यता थी कि यदि हम उस व्यक्ति के, जो किसी कारणवश

हमारा विरोधी हो गया है, विरोध का कारण जान लें और उसे दूर कर दें, तो हमारा विरोधी अथवा विपक्षी हमारा दुश्मन न रहकर, हमारा दोस्त बन जाएगा। गांधीजी टालस्टॉय के इस कथन से सहमत थे कि यदि घृणा करनी ही हो तो पाप से करनी चाहिए, न कि पापी से। यदि पापी का पाप समाप्त हो जाएगा, यदि पापी पाप का साथ छोड़ देगा तो वह पापी न रहेगा, वह सुधार जाएगा, पुण्यात्मा हो जाएगा। प्रतिपक्षी से सहपक्षी और फिर मित्र हो जाएगा। गांधीजी के सत्याग्रह के यही तीन आधारभूत सिद्धांत अथवा मौलिक आधार थे। इन मान्यताओं के आधार पर उन्होंने अपने सत्याग्रह सिद्धांत का प्रतिपादन किया और उसके ऐसे हिंसक व ठोस साधन खोज निकाले जिनसे विभिन्न समस्याओं व विवादों का स्थायी तथा स्वीकार्य हल निकल सके।

सत्याग्रह का उद्देश्य–

गांधीजी ने जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सत्याग्रह किए, उनसे ऐसे विभिन्न उद्देश्यों के उदाहरण मिलते हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए सत्याग्रह का सहारा लिया जा सकता है। सत्याग्रह अपने नकारात्मक रूप में, अन्याय के विरूद्ध अहिंसक संघर्ष है और सकारात्मक दृष्टि से यह जन–कल्याण की दिशा में रचनात्मक कार्यक्रम का एक मार्ग है। सत्याग्रह क़ानून की अवहेलना करने के लिए नहीं किया जाता, हालांकि लगता कुछ ऐसा ही है। गांधीजी ने सत्याग्रह का प्रयोग दक्षिण अफ्रीका की रंगभेद की नीति तथा भारत में विदेशी तथा सामंतवादी शासन जैसी असाधारण राजनैतिक तथा सामाजिक परिस्थितियों से संघर्ष करने के लिए किया।

एक सत्याग्रही, जो सामान्यतः क़ानूनों का पालन करता है, वह सत्याग्रह के माध्यम से कानूनों में ऐसे संशोधनों की माँग करता है जिनसे वो अधिक औचित्यपूर्ण तथा स्वीकार्य बन जाए। इस प्रकार, वह तो राज्य का मित्र होता है, शत्रु नहीं। गांधीजी के विभिन्न सत्याग्रहों के अध्ययन से ऐसा लगता है कि इसका प्रयोग किसी भी ऐसे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किया जा सकता है, जो स्वार्थपूर्ण न होकर, समाज के कल्याण के लिए हो। यह सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक परिवर्तन का एक सकारात्मक तथा सबल साधन है। रिचर्ड ग्रैग के अनुसार, सत्याग्रह एक ऐसा 'त्रिपक्षीय दर्शन' है, जिसमें एक और सत्याग्रही अपने आप को विपक्षी की दृष्टि से देखता है, दूसरी तरफ विपक्षी अपने आप को सत्याग्रही की दृष्टि से देखता है तथा तीसरी ओर दर्शक सत्याग्रही व उसके विपक्षी दोनों को परस्पर रूप से देखते हैं और निर्णय करते हैं कि कौन कितना सही है और कितना ग़लत।

सत्याग्रह 'हृदय परिवर्तन' तथा जनजागरण का एक सबल साधन है। इसके द्वारा, सत्याग्रही अपने विपक्षी को सत्य और न्याय का रास्ता चुनने और असत्य और अन्याय का मार्ग त्यागने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार, सत्याग्रह अत्याचारी, सत्याग्रही तथा सामान्य दर्शकों सभी का समान रूप से उद्धार करता है, उन्हें जागरूक व शिक्षित बनाता है और उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है।

अभी–अभी श्री अण्णा हजारे द्वारा दिल्ली में सरकार के विरूद्ध भ्रष्टाचार निर्मूलन कानून बनाने, लोकपाल बिल सुधारों के साथ पारित करने के संबंध में आंदोलन/सत्याग्रह किया था। इसमें कई सारे लोगों ने उनका समर्थन किया तथा साथ दिया। सरकार उनकी माँगे मानने के लिए तैयार हुई। सरकार में हलचल मच गई। कई दिग्गज नेता उनसे मिलने आए, सत्याग्रह समाप्त करने की बात करने लगे। परंतु वे अपने निर्णय पर अड़िग रहें। इक्कीस दिन का उपवास किया। सरकार घबरा गई थी कि उन्हें कुछ हुआ तो अनर्थ होगा। जनता उन्हें माफ नहीं करेगी। आनन–फ़ानन में सरकार ने उनकी माँगों को कुछ सुधारों के साथ मानने की बात कही और आश्वासन दिया कि वे लोकसभा में लोकपाल विधेयक रखेंगे, चर्चा होगी तत्पश्चात् आगे कारवाई होगी। अभी–अभी काँग्रेस सरकार ने दोनों सदनों में भारी हंगामे तथा विरोध के बावजूद लोकपाल विधेयक बिल को सुधारों के साथ पारित किया। आगे इसमें सुधार की गुंजाइश है। भ्रश्टाचार विरोधी क़ानून का ठीक से पालन नहीं किया जा रहा। भूमि अधिग्रहण क़ानून पर अभी भी संभ्रम है। आगे और इन सब बातों को लेकर श्री अण्णा हजारे जी भविष्य में जन–आंदोलन तैयार कर सत्याग्रह पर बैठने वाले हैं। इस सत्याग्रह के लिए अण्णाजी ने बापू को अपना प्रेरणा स्थान माना है। उन्होंने बापू को पढ़ा, समझा और बाद में उनके विचारों को कृति में लाया। जब भी वे सत्याग्रह/आंदोलन पर बैठें उन्होंने गांधीजी की समाधि पर जाकर प्रार्थना की, आत्मबल लिया फिर अपने कार्य को आगे बढ़ाया। सत्याग्रह में वह शक्ति है इसी प्रतीति को फिर एक बार श्री अण्णा हजारे ने साबित कर दिखाया।

गांधीजी ने अपने कार्य को आगे बढ़ाने के लिए सेवाग्राम आश्रम में अनेक सभाएँ आयोजित की। वे सेवाग्राम में ही रहना पसंद करते थे। वहाँ उन्होंने कार्यकर्ताओं को चरखे पर सूत कातना सीखाया। स्वावलंबी बनने की शिक्षा दी। उनके सत्याग्रहों में अनेक नेताओं ने सहयोग दिया। इस आंदोलन में आपके साथ रहें श्री राजगोपालाचारी, वल्लभभाई पटेल, सरोजिनी नायडू, मालवीय जी, स्वामी श्रद्धानंद, गोखले, तिलक, मोतीलाल नेहरू, आदि। सत्याग्रह के दौरान अँग्रेज़ों ने बापू को कई बार जेल में बंद कर दिया। परंतु उन्होंने अपना कार्य बंद नहीं किया। ठीक इसी तरह अण्णा हजारे जी को जेल में डालने के बाद उन्होंने भी वहाँ बैठकर अपना लोकपाल विधेयक क़ानून के लिए सत्याग्रह शुरू रखा।

गांधीजी कहा करते थे कि जीवन में सफल होना चाहते हो तो कुछ सरल नियमों का पालन करना होगा। ये नियम जितने सरल हैं, उन्हें निभाना उतना ही सरल नहीं है, इसलिए पक्का निश्चय करके इन नियमों का पूरे हृदय से पालन करना चाहिए।

1. कम बोलना चाहिए।
2. सुनो सबकी, अपनाओ सत्य को ही।
3. जीवन के प्रत्येक क्षण का हिसाब रखो। जिस काम के लिए जो समय निश्चित है, उसमें ही वह काम करो।
4. निर्धनों की भाँति सादा जीवन बिताओ। धनी होकर भी धन का अभिमान न करो।
5. पाई–पाई के खर्च का ब्यौरा रखो।
6. केवल अच्छी पुस्तकें पढ़ो। जो पढ़ो उसे अपने विचार में ढालो।
7. प्रतिदिन नियमपूर्वक व्यायाम करो।
8. डायरी लिखने का अभ्यास बनाओ।
9. अपने स्वभाव को अपने वश में रखो।
10. प्रतिदिन दोनों समय प्रार्थना अवश्य करो।

गांधीजी की दृष्टि से सत्याग्रह का जनतंत्र में इस प्रकार प्रयोग किया जाए कि उसके प्रयोग से लोगों को कानून, संविधान अथवा संविधान द्वारा स्थापित शासन व्यवस्था के प्रति श्रद्धा कम या लुप्त न हो जाए।

- सत्याग्रह का उद्देश्य कानून की त्रुटियों को दूर करवाकर उसकी गुणवत्ता को बढ़ाना मात्र हो, जिससे लोग कानूनों का जोर जबरदस्ती अथवा दंड के भय, लोभ अथवा लालच के बजाय, स्वेच्छा से पालन कर सकें।
- जनतंत्र और सत्याग्रह दोनों के साध्य और साधन एक जैसे हैं, इसलिए सत्याग्रह जनतंत्र का प्रतिवाद अथवा विकल्प नहीं हो सकता।
- जनतंत्र में सत्याग्रह का प्रयोग बहुत सोच–समझकर विचार के बाद, कभी–कभार और

एक अंतिम अस्त्र के रूप में ही किया जाना चाहिए।

हिंदी गीत मेला " सुहाना सफ़र 2" लंका भारतीय कला संगम द्वारा

मोहनदास करमचंद गांधी भलमनसाहत का सर्वोच्च प्रतिमान

शरणगुप्त वीरसिंह
पद्मा वीरसिंह

इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि यदि कोई चितेरा करुणा, अहिंसा, उदारता, सहिष्णुता, सत्यवादिता एवं त्याग आदि के संयोग से किसी चित्र का निर्माण करे तो गांधी जी का ही रूप उभर आएगा। क्योंकि वे ही उन सभी गुणों का मूर्तिमान रूप हैं। वे अद्वितीय हैं। उनके समान कोई दूसरा व्यक्ति कभी हुआ ही नहीं और न ही भविष्य में होगा।

प्रायरू मानव में दुर्लभ उत्तम गुणों से परिपूर्ण सर्वोच्च आदर्श पुरुष मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म 2 अक्तूबर 1869 को गुजरात के कठियावाड ज़िले में स्थित पोरबंदर नामक ग्राम में हुआ था। जिस समय यह घटना घटी शायद ही किसी को यह आभास हुआ होगा कि मानवों के बीच एक देवता पुरुष की उत्पत्ति हुई है जो आगे चलकर महात्मा कहलाएँगे।

विचारणीय है कि गांधी जी का पूरा जीवन जिस परिवेश में व्यतीत हुआ, उस पर अंग्रेज़ों का आधिपत्य रहा था। परिणामवश गांधी जी को भी शेष भारतवासियों की भांति अंग्रज़ी शासन की दमनकारी नीति तथा अत्याचारों को सहन करना पड़ा। उस समय अंग्रेज़ों के समक्ष नतमस्तक होना भारतवासियों के लिए एक सामान्य–सा व्यवहार बना हुआ था। परंतु यह स्थिति स्वाभिमानी भारतियों को असहय थी। ऐसा होते हुए भी वे उसका विरोध न करने को विवश हुए, क्योंकि अंग्रेज़ो की सैन्य शक्ति बहुत अधिक थी। उसी माहौल में गांधी जी राजनीति में पदार्पण करके भारतियों के राजनीतिक संगठन का नेतृत्व सँभालने लगे। वे भली – भाँति जानते थे कि शस्त्रोपयोग के द्वारा अंग्रेज़ों को परास्त करना असंभव है। अतरू उन्होंने अहिंसात्मक विरोध करने का मार्ग अपनाया जो अभूतपूर्व था।

यदि सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो यह बात उजागर होगी कि अन्याय के प्रति विरोध जताने की प्रवृत्ति का बीजारोपण गांधी जी के मन में दक्षिण अफ्रीका के प्रवास के दौरान ही हुआ था। वहाँ के गोरे शासक प्रवासी भारतियों पर घोर अत्याचार करते थे। उससे क्षुब्ध होकर गांधी जी ने डटकर उन अत्याचारों का विरोध किया और उनके प्रयासों के फलस्वरुप दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतियों की दशा सुधर गयी। इस सफलता ने भारतवासियों पर अपने ही देश में हो रहे अत्याचारों का विरोध करने के लिए गांधी जी को प्रेरित किया।

तब गांधी जी अंग्रेज़ी शासकों के प्रति विरोध दर्शाने के लिए असहयोग आभियान चलाने लगे। यह अभियान अहिंसा पर ही आधारित था। गांधी जी की असहयोग गतिविधियों के एक चरण में उनके आह्वान पर भारतीय जनता ने अंग्रेजों द्वारा निर्मित माल का बहिष्कार किया। अंग्रेज़ों के कारखानों से निकले कपड़े जला दिये गये। ऐसे कपडों के बदले में खादी के वस्त्र अपनाये जाने लगे। गांधी जी स्वयं सूत से खादी के कपड़े बुनकर पहनने लगे। विदेशी कपड़ों के इस बहिष्कार का परिणाम यह हुआ कि माल न बिकने के कारण अंग्रेज़ों को भारी नुकसान उठाना पड़ा। कवि सोहनलाल द्विवेदी ने अपनी कविता खादी – गीत के द्वारा खादी अभियान की इस जीत को अमर बना दिया।

खादी – गीत

खादी के धागे धागे में अपनेपन का अभिमान भरा
भारत का इसमें मान भरा अन्यायी का अपमान भरा
खादी के रेशे रेशे में अपने भाई का प्यार भरा
माँ बहनों का सत्कार भरा बच्चों का दुलार भरा

गांधी जी के व्यक्तित्व में ऐसा चमत्कार निहित था कि वे अपनी वाणी से करोडों लोगों को प्रभावित कर सकते थे। उनके आह्वान सुनकर देशभर की जनता उनका अनुसरण करने लगी। उनके इस गुण को उजागर करते हुए कवि सोहनलाल द्विवेदी ने कहा,

युगावतार बापू

चल पड़ा जिधर को डग मग में बढ़ चले कोटि पग उसी ओर
पड़ गयी जिधर भी एक दृष्टि गढ़ गयी कोटि दृग उसी ओर
जिसके सिर पर निज धरा हाथ उसके सिर रक्षक कोटि
जिस पर निज मस्तक झुका दिया झुक गये उसी पर कोटि माथ

सोचने की बात यह है कि क्षीणकाया दुर्बल गांधी जी में बलशाली अंग्रेज़ों के अन्यायपूर्ण व्यवहारों का विरोध करने का दृढ़ संकल्प कहाँ से आया? इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि यह दैवी प्रेरणा का ही परिणाम है। उनकी संकल्प शक्ति का एक ज्वलंत उदाहरण है नमक यात्रा।

किसी समय अंग्रेज़ी सरकार ने भारत में नमक कानून लागू किया। इस नियम के अनुसार सागर तट पर स्वाभाविक रूप से एकत्रित नमक को ले जाना भारतीयों के लिए वर्ज्य था। इस कानून को तोड़ना एक दंडनीय अपराध माना जाता था। भारतवासियों को सेवन के लिए आवश्यक नमक मूल्य देकर अंग्रेज़ों से ही खरीदना पड़ता था। गांधी जी ने घोषणा की कि यह कानून गलत है और इसलिए वे स्वयं इस नियम का उल्लंघन करेंगे। अंग्रेज़ी सरकार की कई चेतावनियों की उपेक्षा करते हुए गांधी जी ने नमक यात्रा का आयोजन किया। उन्होंने साबरमती आश्रम से डांडी सागर तट तक पैदल चलकर नमक का एक ढेला उठा लिया। अंग्रेज़ी सरकार ने उनको बंदी बनाया और कारावास में बंद किया। लेकिन भारतवासियों ने नमक का कानून तोड़ना जारी रखा और अंत में विवश होकर अंग्रेज़ी सरकार ने उस कानून को रद्द किया।

अवलोकनीय है कि गांधी जी अंग्रेज़ी शासन के विरोध में निरंतर सक्रिय रहे। उनके दवारा किये गये उल्लेखनीय कार्य हैं–चंपारन नील कृषकों की समस्या का निवारण, हरिजन उदधार, हिन्दू–मुसलमान के बीच समन्वय भावना का समर्थन, हिन्दुस्तानी भाषा को अपनाने का प्रस्ताव तथा भारत छोड़ो आन्दोलन।

यह तो निर्विवाद है कि इनमें से सबसे महत्वपूर्ण कार्य भारत छोड़ो आन्दोलन है जिसके परिणमस्वरूप भारत सन 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त करने में समर्थ हुआ था।

गांधी जी में उपलब्ध कर्मनिष्ठा, अप्रतिम धैर्य, आत्मविश्वास, सौहार्द, सहिष्णुता आदि महान गुण आज के युग के हर व्यक्ति में होना चाहिए। तभी यह संसार एक रामराज्य बनेगा। ऐसे महान गुणों के अभाव के कारण यह संसार जिस तेज़ी से विनाश की ओर अधोमुख हो रहा है, उसे रोककर उद्धार के प्रति उनमुख करना असंभव–सा हो गया है। इस विनाश से संसार को बचाने का एकमात्र उपाय हम सभी को गांधी जी का अनुसरण करना है। अस्तु।

26 अक्तूबर 2018 को प्रो. इंद्रा दसनायक शिक्षकों की कार्यशाला में

सत्य का, अहिंसा का मार्ग जितना सीधा है उतना ही तंग भी खांडे की धार पर चलने के समान है।
– महात्मा गांधी

लंका की भूमि पर गांधी जी ने रखे पाँव

चंदिमा चंद्रसिंह
हिंदी अध्यापिका
स्वर्ण जयंती महा विद्यालय, केगोल

1927 नवम्बर 12 तारीख रात को लगभग 9.30 पर महत्मा गांधी जी प्रमुख समूह को लेकर एस्. एस्. चिन्कोआ जहाज़ कोलंबो बंदरगाह के मेल्बोन जेट्टी पर धीरे–धीरे पहुँच रही थी।

वह आ रहा है.....

घाट के पास जमा हो गये कुलीन वर्ग, बंदरगाह के बाहर इकट्ठे हुए हज़ारों लोगों के मुँह से एक ही नाम तालानुरूप गाये जानेवाले गीत की तरह गुँजने लगा।

गांधी ....., गांधी ....., गांधी .....,

मेल्बोन घाट के चारों ओर रंग बिरंगे फूलों और झंडों की सजावटों से अलंकृत किया गया था। आधिकारिक रथ तक गांधी जी चलनेवाले मार्ग पर मखमली तप्पड़ बिछा हुआ था।

श्री लंका के श्रमिक संघ की सेना के सिपाही गण अपना प्रणाम प्रस्तुत करने के लिए रास्ते के किनारे पर क्रम से खड़े हुए थे। सेना ने महात्मा गांधी जी की पूरी यात्रा के लिए सुरक्षा दी थी। इस सेना में कुल 65 सिपाही थे। उन लोगों ने लाल कमीज़ तथा सफ़ेद पॅन्ट पहनकर विशेष प्रकार की टोपियाँ भी पहनी थी।

रात को लगभग 9.35 पर सबसे पहले जेट्टी पर श्रीमती कस्तूरबा जी ने पाँव रखा था। श्री.ए.ई. गुणसिंह जी ने उसका सादर अभिनन्दन किया था। और उनको दर्शकों से परिचित कराया था। उन्होंने अपना हाथ जोड़कर प्रणाम किया। कुछ क्षण में सफ़ेद खद्दर का कपड़ा और शॉल धारण किये गांधी जी का रूप दर्शन हुआ। बी. अम्बिच्चि जी ने गांधी जी का मालार्पण किया था। आधिकारिक लोगों ने गांधी जी का पाँव स्पर्श करने का प्रयत्न किये थे। कुछ लोगों ने अपने हाथों से उनके चरण छुए थे।

ए.ई. गुणसिंह महोदय से क्बेवियर इग्नेषस पेरेरा का परिचय किया गया था कि वे भारतीय कांग्रेस के प्रमुख प्रतिनिधि हुए थे और प्रथम राज्य परिषद के मंत्री भी हुए थे। उनका परिचय सुनकर गांधी जी ने कहा कि ''ये मेरे पुराने दोस्त है।''

गंधी जी की स्वीकृति समिति ने मेल्बोन जेट्टी पा इकट्ठे हुए जन समूह की सीमित करने का प्रबंध किया था। इस अकसर पर सिर्फ 120 जनों के लिए अनुमति पत्र प्रकाशित किये गये थे। उनमें टी. बी. जया, डॉ. एस. मुत्तइया, ए.ई. गुणसिंह, क्बेवियर इग्नेषस पेरेरा, सी. एस. इसेड. फ़र्नान्डु आदि थे।

गांधी जी अैर कस्तूरबा जी ने लोगों के सामने अपना हाथ जोड़कर प्रणाम किया था। श्री लंका श्रमिक संघ के स्वयं सेवक सेना भी अपना आभार प्रकट करते थे तब गांधी जी ने अपना हाथ जोड़कर प्रणाम किया था।

गांधी जी के साथ महादेव देसाई, सी. राजगोपालचारी, प्यारेलाल नागर, जुमनदास गांधी, सी. राजगोपालचारी की जवान बेटी लक्ष्मी भी आये थे।

कोलंबो बंदरगाह के मेल्बोन घाट के आगे जो मैदान था उसमें गांधी जी का दर्शन करने के लिए बहुत लोग जमा हो गये थे। बंदरगाह के बाहर और रस्ते के दोनों ओर भी हज़ारों लोग इकट्ठे हुए थे।

गांधी जी लाल मखमल पर धीरे–धीरे कदम रखते हुए सजायी गयी मोटर गाड़ी पर तक आये और बैठ गये। गाड़ी धीरे–धीरे यात्रा शुरू करने लगी। दोनों ओर के लोग ताली बजाने लगे तथा उल्लासपूर्वक प्रीतिघोष करने लगे।

गांधी की जय .....

यह ध्वनि चारों तरफ़ गूँज रही थी।

यह गाड़ी चर्च गली, लिडन बेस्तियन गली, लोटस रोड से होकर आरक महल तक पहुँच गयी जहाँ गांधी जी के ठहरने का सारा प्रबंध किया गया था।

इस काल में श्री लंका के प्रबंधकीय पद पर श्री हरबट स्टेंलि महोदय काम करते थे। उन्होंने गांधी जी की स्वीकार की। दोनों में अच्छी मुलाकात भी हुई। सन् 1927 से 1931 तक श्री लंका में प्रबंधकीय पद पर श्रीमान हरबट स्टेंलि महोदय काम करते थे।

विचार में, वाणी में और आचार में सत्य का होना ही सत्य है ।

– महात्मा गांधी

गांधी जी के साथ संलग्न डॉनमोर मंडल

अमानि विक्रमआरच्चि
हिंदी अध्यापिका
स्वामी विवेकानन्द सांस्कृतिक केंद्र, कोलम्बो
श्री लंका

12 नवंबर सन् 1927 में श्री लंका की राजनीति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण घटना हुई। महात्मा गांधी के आने से कई घंटे के बाद कोलंबो बंदरगाह से डॉनमोर मंडल का आगमन भी हुआ। डॉनमोर मंडल के सभापति बैरन डॉनमोर, उनकी पत्नी और मंडल के अन्य तीन सदस्यों का यह आगमन श्री लंका की राजनीति के इतिहास में अभिन्न अंश बन गया।

गवर्नर हियू चार्ल्स क्लिफ़र्ड (1925–1927) के प्रस्ताव से ब्रिटिश के महाराज द्वारा भेजे गये, ये चार व्यक्तियों सहित मंडल के अन्य सदस्य थे, श्रीमान मॅतिव नेदन, डॉ. ड्रमण्ड शील्स और श्रीमान जेफरी बट्लर।

21 नवंबर सन् 1927 में डॉनमोर मंडल ने अपना कार्य शुरू किया, तब गांधी जी भी श्री लंका में थे। मंडल अपना कार्य पूरा करके 4 फरवरी सन् 1928 में वापस इंग्लैंड गये। श्री लंका में अंग्रेज़ों के अधीन कार्यरत सचिव द्वारा सन् 1928 जुलाई माह में डॉनमोर मंडल की वार्ता ब्रिटिश संसद तक भेजा गया था। सन् 1931 से मंडल का निर्देश सक्रिय हो रहा था। डॉनमोर मंडल के निर्देश से श्री लंका में सार्वजनिक चुनाव का अधिकार मिला। सार्वजनिक चुनाव का अधिकार प्राप्त एशिया का पहला राष्ट्र श्री लंका था।

ये दोनों अंश सिंहली पुस्तक से अनूदित हैं।

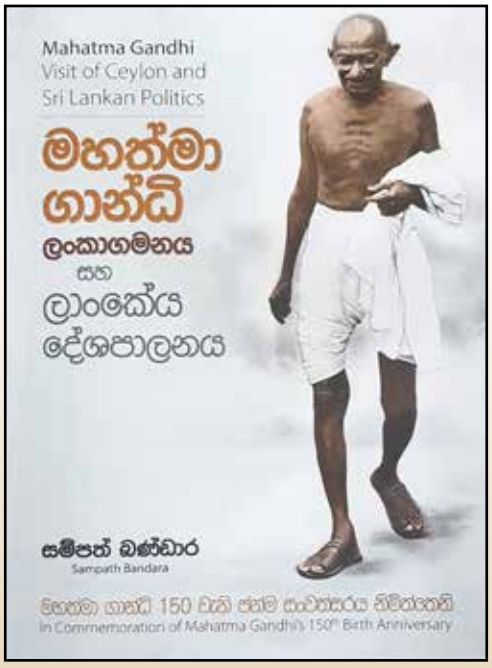

हिंदी दिवस 2018

भारतीय उच्चायोग कोलंबो के उप उच्चायुक्त महोदय शिल्पक अंबुले जी, प्रथम सचिव श्रीमान नितीन सुभाष येओला ने सभी अधिकारियों को हिंदी दिवस की बधाई दी। कॅलनिय विश्वविद्यालय में हिंदी चेयर डॉ. डी. पी. सिंह और स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र में हिंदी चेयर डॉ.मोनिका शर्मा के साथ अन्य हिंदी शिक्षिकाओं हिंदी पखवाडे के विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जिसमें अधिकारियों ने बढ़ चढकर भाग लिया।

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र : हिंदी दिवस और हिंदी पखवाड़े की विविध गतिविधियाँ

हिंदी पखवाड़ा सितंबर 2018

हिन्दी राष्ट्रभाषा बनी

शमिला कौमुदि

बिहार–छात्र सम्मेलन में अध्यक्ष के नाते गांधी जी ने जो भाषण मातृभाषा और राष्ट्रभाषा की पुष्टि में किया, उसे पढ़ लेना अच्छा होगा।

''इस सम्मेलन का काम इस प्रांत की भाषा में ही–और वही राष्ट्रभाषा भी है–करने का निश्चय करके आपने दूरंदेशी से काम लिया है। इसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। मुझे आशा है कि आप लोग यह प्रथा जारी रखेंगे।

''हमने मातृभाषा का अनादर किया है। इस पाप का कड़वा फल हमें जरूर भोगना पड़ेगा। हम में और हमारे घर के लोगों के बीच कितना ज्यादा व्यवधान(अन्तर) पैदा हो गया है, इसके साक्षी इस सम्मेलन में आने वाले हम सभी हैं। हम जो कुछ सीखते हैं, वह अपनी माताओं को नहीं समझाते और न समझा सकते हैं। जो शिक्षा हमें मिलती है, उसका प्रचार हम अपने घर में नहीं करते और न कर सकते हैं। ऐसा दुःखद परिणाम अंग्रेज़ कुटुम्बों में कभी नहीं देखा जाता। इंग्लैंड में और दूसरे देशों में जहाँ शिक्षा मातृभाषा में दी जाती है, वहाँ विद्यार्थी स्कूलों में जो कुछ पढ़ते हैं, वह जाकर अपने–अपने माता–पिता को सुनात हैं और घर के नौकर–चाकरों और दूसरे लोगों को भी वह मालूम हो जाता है। इस तरह जो शिक्षा बच्चों को स्कूलों में मिलती है, उसका लाभ घर के लोगों को भी मिल जाता है।

''मातृभाषा का अनादर माँ के अनादर के बराबर है। जो मातृभाषा का अपमान करता है, वह 'स्वदेश–भक्त' कहलाने लायक नहीं। बहुत से लोग ऐसा कहते सुने जाते हैं कि 'हमारी भाषा में ऐसे शब्द नहीं, जिनमें हमारे ऊँचे विचार प्रकट किये जा सकें।' किन्तु यह कोई भाषा का दोष नहीं। भाषा को बनाना और बढ़ाना हमारा अपना ही कर्तव्य है। एक समय ऐसा था, जब अंग्रेजी भाषा की भी यही हालत थी। अंग्रेजी का विकास इसलिए हुआ कि अंग्रेज आगे बढ़े और उन्होंने स्वयं भाषा की उन्नति की। यदि हम मातृभाषा की उन्नति नहीं कर सके और उनका विकास कर सकते हैं, तो इस में जरा भी शक नहीं कि हम सदा के लिए गुलाम बने रहेंगे।

''तुलसीदास जी अपने दिव्य विचार हिन्दी में प्रकट कर सके थे। रामायण जैसे ग्रंथ बहुत ही थोड़े हैं। गृहस्थाश्रमी होकर भी सब कुछ त्याग कर देने वाले महान् देशभक्त भारतभूषण पण्डित मदनमोहन मालवीय जी को अपने विचार हिन्दी में प्रकट करने में जरा भी कठिनाई न होती। पंडित जी का अंग्रेज़ी–भाषण चाँदी की तरह चमकता हुआ कहा जाता है, किन्तु उनका हिन्दी–भाषण इस तरह चमकता है, जैसे मानसरोवर से निकलती हुई गंगा का प्रवाह सूर्य की किरणों से सोने की तरह चमकता है।

''मुझे अंग्रेज़ी भाषा से वैर नहीं है। इस भाषा का भण्डार अटूट है। यह राजभाषा है और ज्ञान की निधि से भरी–पुरी है। फिर भी मेरी यह राय है कि हिन्दुस्तान के सब लोगों को इसे सीखने की जरूरत नहीं। मैं इतनी ही प्रार्थना करूँगा कि आपस के व्यवहार में और जहाँ–जहाँ हो सके, वहाँ सब लोग मातृभाषा का ही उपयोग करें, और विद्यार्थियों के सिवा जो महाशय यहाँ आये हैं, वे मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाने का प्रयत्न करें।''

अब 1918 के हिन्दी–साहित्य–सम्मेलन(इन्दौर) में चलें। यह सम्मेलन गांधी जी की अध्यक्षता में हुआ था। उसी में स्वीकृत एक प्रस्ताव द्वारा हिन्दी राष्ट्रभाषा मानी गयी। यही नहीं, अहिन्दी प्रदेशों में हिन्दी–प्रचार के लिए मद्रास में दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की भी स्थापना हुई। सम्मेलन की अध्यक्षता करने से पहले गांधीजी ने सम्मेलन के द्वारा एक परिपत्र जारी कराया था, जो तत्कालीन भारत के सभी प्रान्तों के वरिष्ठ नेताओं को भेजा गया था और जिसमें यह पूछा गया था कि भारत में कौन–सी राष्ट्रभाषा का स्थान ले सकती है। उसके उत्तर में जो पत्र आये थे, उनमें अधिकांश की राय हिन्दी के पक्ष में थी।

अध्यक्ष के नाते हिन्दी की व्याख्या करते हुए गांधीजी ने कहा था–''हिन्दी भाषा वह भाषा है, जिसको उत्तर में हिन्दू और मुसलमान बोलते हैं। और वह नागरी अथवा फारसी लिपि में लिखी जाती है।..... भाषा वही श्रेष्ठ है, जिसको जन–समूह सहज में समझ ले।''

हिन्दी और उर्दू के भेद का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा था– ''हिन्दू–मुसलमानों के बीच जो भेद किया जाता है, वह कृत्रिम है। ऐसी ही कृत्रिमता हिन्दी और उर्दू भाषा के भेद में है। दोनों का स्वाभाविक संगम गंगा–यमुना के संगम–सा षोभित अचल रहेगा। मुझे उम्मीद है कि हम हिन्दी–उर्दू के झगड़े में पड़कर अपना बल क्षीण नहीं होने देंगे।.....मुगलों के जमाने में हिन्दी या उर्दू राष्ट्रीय भाषा बनती जाती थी।

राष्ट्रभाषा का संबंध हिन्दी–भाषियों की अपेक्षा अहिन्दी–भाषी प्रान्तों से अधिक था। हिन्दी वालों की तो इतनी ही कमजोरी थी कि वे हिन्दी–भाषी होते हुए भी अंग्रेजी को घरेलू बातचीत तक में अपनाते जाते थे, किन्तु अहिन्दी–भाषी प्रांतों में तो हिन्दी पढ़ाने–लिखाने से ही शुरुआत करनी थी। अतः गांधीजी ने दक्षिण प्रान्तों में हिन्दी पढ़ाने का उपाय किया, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा के रूप में।

लिपि के बारे में भी गांधी के विचार स्पष्ट थे। उन्होंने एक सज्जन को पत्र में लिखा कि ''राष्ट्रीय शिक्षा की योजना में देवनागरी और उर्दू लिपियाँ अनिवार्य होने चाहिए। मेरी तो राय है कि देवनागरी संसार में सबसे ज्यादा वैज्ञानिक और पूर्ण लिपि है। अतः इस दृष्टि से सबसे उपयुक्त राष्ट्रीय लिपि है। परन्तु आज मुसलमानों को इसे स्वीकार करने में जो कठिनाई है, उसका हल मैं नहीं सोच पाता। इसलिए मेरा विचार है कि शिक्षित वर्ग को दोनों ही लिपियों की समान रूप से जानकारी होनी चाहिए। तब जिसमें अधिक शक्ति होगी और ज्यादा सरल होगी, वह राष्ट्रीय लिपि बन जायगी।''

विद्यार्थियों की सभा, पटना में भाषण करते हुए बापूजी ने कहा कि ''यद्यपि मैं देवनागरी लिपि' को राष्ट्रीय लिपि बनाने के पक्ष में हूँ, फिर भी मैं सभी भारतीयों से प्रार्थना करता हूँ कि जब तक हमारे मुसलमान भाई देवनागरी लिपि को स्वीकार नहीं कर लेते, तब तक वे देवनागरी लिपि और फारसी लिपि, दोनों ही सीखें।''

गांधी जी हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर ही बैठाकर और अहिन्दी–भाषी प्रान्तों में हिन्दी–प्रचार की योजना बनाकर संतोष नहीं हुआ। थोड़े ही दिनों बाद 1921 में उन्होंने अपने अंग्रेजी 'यंग इंण्डिया' और गुजराती 'नवजीवन' के साथ हिन्दी में भी 'नवजीवन' निकालना प्रारम्भ कर दिया। इससे एक लाभ यह भी हुआ कि अब तक हिन्दी पत्रों में उनके अंग्रेजी और गुजराती लेखों के हिन्दी अनुवाद हिन्दी पत्रकार अपनी–अपनी भाषा और ढंग से निकालते थे। उसकी जगह उनका प्रमाणिक अनुवाद स्वयं गांधी जी के लिखे स्वतंत्र हिन्दी लेख हिन्दी पाठकों को मिलने लगे।

हिन्दी 'नवजीवन' के प्रारंभिक लेख में गांधी जी ने अपने हिन्दी लेख में लिखा था।

'हिन्दुस्तानी को भारत वर्ष की राष्ट्रीय भाषा बनाने का प्रयत्न मैं हमेशा करता आया हूँ। हिन्दुस्तानी के सिवा दूसरी भाषा राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। इसमें कुछ शक नहीं। जिस भाषा को करोड़ों हिन्दू–मुसलमान बोल सकते हैं, वही अखिल भारत वर्ष की सामान्य भाषा हो सकती है'।

मैं कहता हूँ बड़ी बुद्धि लाईब्रेरियों में बैठकर पठन–पाठन करने से मिलने वाली नहीं है। अपने हाथों से मेहनत करके बुद्धि को तेजस्वी बनाना है। पुस्तकों का स्थान गौण है।
– महात्मा गांधी

सहायक उच्चायोग कैंडी – हिंदी कार्यक्रमों की कुछ झलकियाँ

भारत का प्रधान कोंसलावास हमबंतोटा – हिंदी दिवस

भारत का प्रधान कोंसलावास जाफ़ना – हिंदी कार्यक्रमों की कुछ झलकियाँ

भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में इटली से राजदूत विशेष अतिथि श्रीमती रीनत संधु

होली

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र में होली पर्व हर्षोल्लास से मनाया गया।

श्री लंका – एक भारतीय की दृष्टि से, डॉ॰ शीरीन कुरैशी (लेखिका)

भारतीय सांस्कृतिक केंद्र की पूर्व हिंदी चेयर डॉ. शीरीन कुरैशी के अनुभव और ज्ञान का अनूठा संकलन है यह किताब।

अहिंसा और सत्य ऐसे ओतप्रोत हैं जैसे सिक्के के दोनों रुख।

– महात्मा गांधी

केंद्रीय हिंदी संस्थान की छात्रवृत्ति प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए उन्मुखीकरण कार्यक्रम–2018

विद्यार्थियों के उन्मुखीकरण कार्यक्रम में आगरा, केंद्रीय हिंदी संस्थान की हिंदी छात्रवृत्ति प्राप्त श्री लंका के विद्यार्थियों के साथ भारतीय उच्चायोग कोलंबो के उच्चायुक्त महोदय तरनजीत सिंह संधू, कोलंबो की निदेशिका श्रीमती राजश्री बेहरा व हिंदी चेयर डॉ॰ शीरीन कुरैशी।

सिंहली उपन्यास (वन का चाँद) का हिंदी अनुवाद – सरसि रणसिंह

श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय की हिंदी पी.एच.डी. शोध छात्रा सरसि रणसिंह ने सिंहली उपन्यासकार डब्लिव. ए. सिल्वा के " कॅलै हँद " उपन्यास का हिंदी अनुवाद "वन का चाँद" नाम से किया।

गांधी जी और कविवर रहीम

अचला दमयंति
हिंदी अध्यापिका
स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो

सद्चिन्तन एवं सत्कर्म करनेवाले चाहे जिस देश काल तथा परिस्थिति में हों उनमें वैचारिक सामंजस्य होना स्वाभाविक ही है। चूँकि मार्ग एक है, पथिक भले ही अलग हों। स्पष्टतः वर्तमान भारत की संरचना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की दार्शनिक, शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक विचारधारा से अत्यंत प्रभावित है। उनकी मानवतावादी विचारधारा आज के इस भौतिकतावादी युग के अंधकार में दीपक की तरह प्रकाशवान है। हमें आगे बढ़ने के लिए पिछले प्रेरणा स्रोतों को जगृत करना है। गांधी जी ऐसे ही स्मरण करने योग्य युगपुरुष हैं जिनकी स्मृति मानस प्रक्षालन का आधार है।

कविवर रहीम और गांधी जी के समय में अंतर होते हुए भी गांधी दर्शन का प्रभाव रहीम काव्य में स्पष्टतः द्रष्टव्य है। गांधी जी की चिंतनधारा की एक मुख्य विशेषता यह है कि उन्होंने दीनों की सेवा ही भगवान की सेवा मानी। उन्होंने दीनों को भगवान की संज्ञा दी। उनकी मान्यता यह थी कि मानवता का परम कर्तव्य दीनों की सेवा करना तथा उनकी सहायता करना है। इन जीवित मूर्तियों की पूजा ही असली पूजा है। रहीम ने भी अनाथों–दीनों की सुधि लेनेवालों को दीनबंधु माना है।

"दीन सबन को लखत है–दीनहीं लखै न कोई।
जो रहीम दीनहीं लखें–दीनबंधु सम सोइ ।।"

जिस प्रकार गांधी जी ने हरिजन सेवा गरीबों की सेवा सर्वोपरि माना। ठीक उसी प्रकार रहीम ने भी गरीबों को सुदामा तथा उनकी सहायता करने वालों को कृष्ण मानते हुए उन्हें आदर दिलाने का प्रयत्न किया।

"जो गरीब को आदरे–ते रहीम बड़ लोग ।
कहां सुदामा बापुरो–कृष्ण मिताई जोग ।।"

स्पष्टतः गांधी जी सर्वधर्म सम्भाव की प्रतिमूर्ति थे। उनके मत के अनुसार सभी धर्मों का सार एक है। अतः वे सभी धर्मों का आदर करते थे। उनकी प्रार्थना सभा में ग्रंथों के अंश पढ़े जाते थे। मानवता की पूजा ही उनकी प्रार्थना थी और प्राणिमात्र में ईश्वर दर्शन उनकी साधना थी। वे धार्मिक सहिष्णुता के साकार स्वरूप थे। यद्यपि रहीम मुसलमान थे तथापि उन्होंने कृष्णभक्ति के अनेक पदों का सृजन किया था।

गांधी जी ने समाज सुधारक के रूप में जो क्रांतिधारा चलाई वह अक्षुण्ण है। स्वतंत्रता के बाद का भारत जातिवाद, छुआछूत, दलितोद्धार आदि के उन्मूलन का परिणाम है। गांधी जी संत थे, उन्होंने अपने जीवन को यज्ञ स्थल बनाया और पौराणिक ग्रंथों से उदाहरण लेकर नवीन परिदृश्य में उसका रोपण किया। अंशतः वे भौतिकवादिता और अर्थ केंद्रित समाज के विरोधी थे। उनका मूलमंत्र यही था कि जीवन सादा व सदाचार पूर्ण हो, उन्होंने संग्रह का त्याग ऋषिदर्शन से लेकर वर्तमान विद्वेष पूर्ण स्थिति को ध्यानमें रखते हुए सिखाया था।

रहीम दरबारी कवि थे यद्यपि उनके लिए किसी प्रकार का सुख दुर्लभ नहीं था तथापि अर्थ की क्षणभंगुरता से वे भलीभांति परिचित थे। गांधी जी भी धनसंग्रह को धर्म विरूद्ध मानते थे। उनके मतानुसार अत्यधिक लालासा पापोन्मुख करती है। रहीम ने भी धन की चंचलता व्यक्त की है–

कमला थिर न रहीम कहि–यह जानत सब कोय।
पुरूष पुरातन की वधू – क्यों न चंचला होय।।

गांधी जी की और एक विशेषता यह थी कि वे अपनी छोटी से छोटी वस्तुओं की उपयोगिता समझते हुए उसकी देख–रेख करते थे। वे कागज़ का टुकड़ा पिन जैसी वस्तुओं को भी व्यर्थ नहीं होने देते थे। वस्तुत लघुता की यह निष्ठा ही उन्हें समाज के निम्नवर्ग की सेवा से जोड़ पाई। रहीम ने भी सुई और तलवार दोनों को जीवनोपयोगी माना।

रहिमन देख बड़ेन को लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवे सुई कहा करे तरवारि ।।

कविवर रहीम ने सुख–दुख को समान रूप से भुगतने की बात की है। उनके मतानुसार दुख में अति व्याकुलता नहीं होनी चाहिए तथा सुख में इतरना भी नहीं चाहिए। दोनों ही अवस्थाओं में सामान्य बने रहना ही महानता है। गाँधी जी भी गीता–दर्शन को अक्षरशः जीते थे।

यह विदित है कि गांधी जी प्राकृतिक चिकित्सा के अनुगामी थे। वे जल–चिकित्सा, सूर्य–चिकित्सा आदि का विधिवत पालन करते हुए आरोग्य का सेवन करते थे। उपवास पर उनका विशेष उत्साह था। गांधी जी की मान्यता यह थी कि प्रकृति स्वयं चिकित्सक है और हर रोग का निदान उसके पास है। कमी हमारे धैर्य व विश्वास में हो सकती है। रहीम ने भी संसार के अन्य प्राणियों से तुलना करते हुए इस बात की पुष्टि की है। इतना ही नहीं उन्होंने इस शरीर को प्रकृति के साथ सामंजस्य व समानुभूति बनाए रखने की प्रेरणा दी है –

रहिमन बहु भेषन करे वाडि न छाड़त साथ।
खग मृग बासत आरोग बन हरि अनाथ के नाथ।।
जैसे परे सो सहि रहे त्यों रहीम यह देह।
धरती की सी रीत है सीत घाम और मेह।।

स्पष्टतः हर जीव पर संगीत का असर पड़ना स्वाभाविक ही है। अच्छे प्रसंग में रहना, सुसंस्कारों को सबल बनाता है तथा कुसंग का दुष्परिणाम भी भुगतना पड़ता है । अतः समय के महत्व को समझते हुए जीवन को सुव्यवस्थित बनाने हेतु सुविचारों का होना अनिवार्य है एवं सुविचारों हेतु सुसंगति का कोई विकल्प नहीं । इसलिए गांधी जी ने सद्ग्रंथों को सच्चा साथी माना। उसी प्रकार रहीम ने कुसंगति की वर्जना की है –

बसि कुसंग चाहत कुसल यह रहीम अफसोस ।
महिमा घटि समुद्र की रावण बसा पडोस ।।
रहीम उजली प्रकृति कहे नाहिं नीच कर संग ।
करिया बासन कर गहे करिखा लागत अंग ।।

पूज्य बापू ने गीता और मानस को विश्व के अलौकिक ग्रंथ माना उनका कहना था कि जीवन सुधार हेतु मानस पढ़ो और मानस पढ़ने के निमित्त ही हिंदी पढ़ो । गांधी जी और रहीम दोनों के चिंतन में कितना साम्य है।

रामचरितमानस विमल संतन जीवन प्रान।
हिंदु आन को वेद सम यवनहीं प्रगट कुरान।।

गांधी और रहीम दोनों भारतीय संस्कृति के उन्नायक थे। प्रत्येक आस्तिक हिंदु गंगा, गीता, गायत्री पर घोर निष्ठा रखते हैं। गंगा के प्रति रहीम की श्रद्धा अद्वितीय है –

अच्युत चरन तरंगिनी सिव सिव मालती माल।
हरि ने बनायो सुरसरि कीजो इंदव भाल ।।

गंगा की यह महिमा की है वह अपने भक्तों को शिव या विष्णु पद तक दे सकती। रहीम मस्तक पर बालचंद को धारण करने वाले शिव का ही पद चाहते हैं ताकि उनके सिर पर सतत सुरसरि सुशोभित रहे। अंततः कह सकते हैं भारतीय संस्कृति से तादात्म्य रखने वाले रहीम और गांधी मानव मात्र के लिए आलोक स्तंभ हैं।

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र में दीपोत्सव

सत्य रूपी परमेश्वर मेरे लिए रत्न चिंतामणि सिद्ध हुआ है।

– महात्मा गांधी

नया नेतृत्व, नया युग

नधीरा शिवंति हिंदी अध्यापिका,
स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो।

सम्भवामि युगे युगे।' – गीता
(मैं युग–युग में आता हूँ।)
'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति।'
(जो हर क्षण में नवीनता प्राप्त करता है।)

वास्तव में तो नये युग की शुरुआत, जिस दिन गांधीजी ने भारत देश के सार्वजनिक जीवन में प्रवेश किया, तभी हो गयी थी।

बापू के यहाँ कदम रखते ही भारत में मनुष्य का सारा जीवन–दर्शन ही बदल गया। सभ्यता की नयी परिभाषा पैदा हो गयी। सर्वाजनिक सेवा और नेतृत्व का तरीका बदल गया, और पश्चिमी सभ्यताको जहाँ आदर्श माना जाता था, वहाँ उसकी मिथ्या प्रतिष्ठा की कलई खुल गयी और भारतीयता को आदर की दृष्टि से देखा जाने लगा।

अंग्रेज़ी बोलना प्रतिष्ठा की बात मानी जाती थी। पढ़े–लिखे लोग अपनी मातृभाषा में पत्र लिखने के बाजय घर के लोगों को भी अंग्रेजी में ही पत्र लिखने में गौरव और धन्यता मानते थे। गांधी जी ने इस सारे क्रम को एकदम बदल दिया।

विदेश यात्रा पर जो लोग जाते, वे पूरे विदेशी बनकर स्वदेश लौटते थे। गांधी जी ने ठीक इससे उलटा किया। वे जहाज से उतरे तो अपने स्वदेशी–ठेठ काठियावाड़ी–लिबास में। बंबई में जहाँ–जहाँ भी उनका स्वागत हुआ, उसका उत्तर उन्होंने गुजराती या हिंदी में दिया। विदेश यात्रा को समाज पाप मानता था। अतः समाज की नहीं, पिता समान बड़े भाई की आज्ञा मानकर नासिक में जाकर अपनी शुद्धि भी कर ली। यों समाज से तो आजन्म बाहर ही रहे।

बापू गोखले को अपना गुरु मानते थे। उनका आदेश था कि स्वदेश लौटने पर सेवा के काम में भी उतावली न करें। एक वर्ष तक न कहीं भाषण दें, न लेख आदि–द्वारा किसी विषय पर अपने विचार प्रकट करने में जल्दबाजी करें। देश की स्थिति को पूरी तरह से समझ लें, सार्वजनिक सेवकों और नेताओं के विचारो और कार्य पद्धति का गहराई से अवलोकर कर लें, अपनी शक्ति और मर्यादा का भी हिसाब लगा लें, तब जहाँ जो कुछ कहना–करना हो, कहें–करें। गांधी जी ने इस आज्ञा का अक्षरशः पालन किया और पूरी तैयार कर ली, तब वे कार्यक्षेत्र में उतरे।

स्वराज्य कैसा हो, उसके साधन और मार्ग क्या हैं, पश्चिमी सभ्यता का स्वरूप और मूल्य क्या है, इत्यादि के विषय में गांधी जी ने अपने विचार 1908 में ही 'हिन्द स्वराज्य' नाम अपनी छोटी–सी किताब में लिख दिये थे।

साधरण लोग अपना बड़प्पन लोगों से अपनी कोई अलग विशेषता रखने और जताने में मानते हैं। गांधी जी यह मानते थे कि उनमें दूसरों की अपेक्षा कोई खास बात नहीं। वे कहते थे कि वे जो कुछ कर रहे हैं, वैसा हर कोई कर सकता है। ऐसा कहकर वे प्रत्येक मनुष्य की छिपी शक्तियों को जगा देते थे तथा झूठी प्रतिष्ठा के भ्रम में पड़े लोगों को उनकी मर्यादा का भान करा देते थे।

जब गांधी दक्षिण–अफ्रीका में बैरिस्टरी करते थे, तब अदालत से लौटते ही अदालती चोगा खूँटी पर लटकाकर बा के साथ खाना पकाने में लग जाते। रस्किन की 'अन टू दिस लास्ट' पुस्तक पढ़ते ही उन्होंने अपने सारे जीवन क्रम को बदल दिया और 'फिनिक्स–आश्रम' बनाकर शरीर–श्रम से अपनी गुज़र–बसर करने लगे। वहाँ सत्याग्रह के दिनों में अपने देश भाइयों की सेवा का व्रत लिया तो अपनी सारी रहन–सहन एकदम उनके जैसी ही बना ली। भारत में आने पर जैसे ही उन्हें इस देश की असहनीय दरिद्रता का दर्शन हुआ, वे अँगोछा पहनने लग गये।

गांधीजी ने रेल में, घोड़ा गाड़ी में और दक्षिण–अफ्रीका के राष्ट्रपति भवन के सामने मार खाने पर उसे अपना निजी अपमान मानने के बजाए अपनी सारी कौम का अपमान मानकर पूरी कौम को ही ऊपर उठाने को अपना जीवन कार्य बना लिया। क्या दक्षिण–अफ्रीका में और क्या भारत में, उनके तमाम कार्यों में प्रेरणा और प्रकाश का एक मात्र मंत्र रहा है। ' सत्य और अहिंसा '।

बापू का सत्य राम से अलग नहीं था। जटिल से जटिल समस्या को लेकर भी जब कोई बापू के पास पहुँचता, तो फौरन् वे अपना सत्य–अहिंसा का दीपक उठाकर उसे रास्ता दिखा देते। लोग दंग रह जाते। बापू कहते, ''यह दीपक हाथ में ले लो, सब कुछ साफ–साफ सूझा जायगा और साँप–बिच्छुओं से रक्षा हो जाएगी।''

राजनीति, धर्म, अर्थशास्त्र, समाज–सुधार, हर जगह हर क्षेत्र में भगवद्गीता उनका पथ–दर्शन करती थी।

दैवी–संपद् में बताया गया सबसे पहला गुण अभय इसी साधना का फल है, जो उनमें सबसे अधिक मात्रा में था। गांधी जी पहले आदमी थे, जिन्होंने डंके की चोट से कहा कि अंग्रेजी सल्तनत को उखाड़ना मेरा धर्म है। न्यायाधीशों से उन्होंने कहा कि यदि आप भी मानते हैं कि यह हुकूमत खराब है, तो अपनी नौकरी छोड़ दीजिये, लेकिन यदि आपके ख्याल में सारी जनता के लिए यह हितकर है, तो मुझे कानून में बतायी अधिक–से–अधिक सजा दीजिए। गांधी जी से पहले ऐसा किसने कहा था?

सरकारी अधिकारियों और अपने विरोधियों के साथ मतभेद रखते हुए भी गांधी जी अपने व्यवहार में जितना सौजन्य और जितनी शालीनता बरतते थे, उसकी मिसाल संसार के इतिहास में शायद ही दूसरी मिले। यही नहीं, चरित्र और सिखावन का असर इतना पड़ चुका था कि कानून–भंग करने के आरोप में जिन पर मामले चलते, वे सब निःसंकोच और निर्भयता के साथ कहने लग गये थे कि ''हाँ, हमने यह कानून तोड़ा है।''

संसार में आम तौर पर लोग मानते और कहते हैं कि राजनीति में सच, झूठ, धोखा, छल, कपट सब चलता है–वाराङनेव नृपनीतिरनेकरूपा!

गांधी जी ने इस मान्यता को सदा गलत और हानिकर माना। वे मानते थे कि चारित्रय को गिराकर संसार का कोई काम नहीं बन सकता। इसीलिए चरित्र–शुद्धि और साधन–शुद्धि पर बापू ने सबसे अधिक जोर दिया है।

धर्म और राजनीति एक साथ चल ही नहीं सकते। गांधीजी ने बहुत बल देकर हमेशा कहा कि धर्महीन राजनीति गले की फाँसी है। राजनीति को सदा धर्म के रास्ते से ही चलना चाहिए और वह 'धर्म' भी धर्म नहीं, जो राजनीति से परहेज करे। उन्हें राजनीति में इसीलिए आना पड़ा कि उनके मतानुसार राजनीति को शुद्ध किये बिना धर्म का भी पालन नहीं हो सकता।

जाता–पाँत, छुआछूत, अमीर–गरीब, ऊँच–नीच आदि के सब भेद–भावों को मिटाने का मार्ग उन्होंने सारे राष्ट्र को बताया और स्वयं उस पर प्राणों की बाजी लगाकर अमल किया। अस्पृश्यता के बारे में वे मानते थे कि यह कलंग अगर नहीं मिटाया जा सका, तो स्वयं हिन्दू–धर्म पृथ्वीतल से मिट जायगा। जब सर्वण समाज उन्हें अपने में मिलाने का प्रयत्न करेगा, तो उसने अपनी अनेक मान्यताओं, धारणाओं और आदतों को बदलना होगा। यह तभी संभव होगा, जब हिन्दू–समाज अपने दिल को बड़ा बनायेगा।यह प्रक्रिया निश्चय ही हिन्दू–समाज के संपूर्ण जीवन–दर्शन और व्यवहार को बदल देगी। इससे सवर्ण हिन्दू–समाज का जीवन शुद्ध होगा, अस्पृश्यों का जीवन भी शुद्ध होकर ऊँचे स्तर पर आने लगेगा और अप्रत्यक्ष रूप से इसके फलस्वरूप मुस्लिम–समाज की विचारधारा और उनके व्यवहार पर भी निश्चित असर होगा।

केवल राजनीति नहीं, व्यवहार–नीति में भी लोग आम तौर पर 'जैसे को तैसा', 'शठे शाठयम्' नियम को मानते हैं। लेकिन गांधीजी स्वभाव से ही वे बुरे

के साथ भी भलाई करने की बात मानते और करते आये। उन पर प्राण घातक हमला करने वाले के साथ भी उनका व्यवहार क्षमा कर रहा है।

एक और विशेषता गांधी जी की यह थी कि बड़ी–से–बड़ी बात को सँभालते हुए छोटी–से–छोटी बात भी वे भूलते नहीं थे। आश्रम में वे चले जाते। रसोई विषयक सारी बातें में वे पूरी दिलचस्पी लेते, कहीं कोई कमी दिखती तो स्वयं पूर्ति करती।

सुबह मुँह धोने के बाद दतौन धोकर जलाने के लिए गांधी जी सूख ने को संभाल कर एक तरफ़ रख देते। हाथ धाने के लिए पानी भी जरूरत से अधिक कोई भूल से गिराता, तो कहते, ''साबरमती के सारे पानी के मालिक हम ही नहीं, और लोग भी हैं।

समय के बड़े पाबन्द। उनसे मिलने के लिए बड़े–से–बड़े आदमी को भी समय का पालन करना होता। निश्चित समय पूरा होते ही घड़ी दिखा देते। रेल से कहीं जाना होता, तो ट्रेन के आने से 10–15 मिनट पहले स्टेशन पहुँच जाते और मिलने वालों को वहीं बुलाकर बातचीत करते।

देशभक्त प्रायः किताब में ढ़ीले होते हैं। कोई हिसाब या रसीद माँगता है तो अपमान समझते हैं। कहते हैं, ''हम पर इतना भी विश्वास नहीं?'' गांधी जी इस संबंध में बड़े कड़े थे। उनका आग्रह था कि कार्यकर्ता को हिसाब रखना ही चाहिए। सार्वजनिक धन के उपयोग में पाई–पाई का खर्च भी विवके के साथ हो। मनु ने एक बार पूछा, ''बापू, आप ग्यारह बजे सोते हैं और तीन बजे उठ जाते हैं, फिर लालटेन क्यों बुझा देते हैं?'' तो कहा, ''तेरा बाप कमाता है कि मेरा बाप कमाता है? यह जनता का पैसा है। उसे इस तरह खर्च करने का हमें क्या अधिकार है?''

ऐसा था हमारा, नये युग का नया नेता–बापू।

कुविचार मात्र हिंसा है, उतावली हिंसा है।
– महात्मा गांधी

हिंदी संस्थान, श्री लंका, कुरूनेगल

हिंदी कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ दीपावली मनाना, सद्भावना वॉक एवं संस्कृति वार्ता

जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय–भारतीय रसोई और भारतीय नृत्य

गाँधी विचार के रचनात्मक कार्यक्रम

सरसि रणसिंह,
श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, नुगेगोड़

विभिन्न विषयों पर गांधी जी के विचार

सांप्रदायिक एकता

गाँधी जी ने अपने युग में सभी संप्रदायों को एक ही मंच पर लाकर आज़ादी आंदोलन में शामिल किया। उन्होंने पूरे भारत वर्ष में सांप्रदायिक एकता स्थापित करने में अहिंसा का सहारा लिया। भारत में हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि सभी धर्म के लोग रहते हैं। स्वतंत्रता के समय सांप्रदायिक तनाव बढ़ गया। उन्होंने दिखाया कि इन सबके सहयोग से ही भारत की मुक्ति एवं प्रगति हो सकती है। उनको सभी धर्मों के प्रति सद्भाव था और उनके आश्रम में सर्वध र्म प्रार्थना होती थी। सांप्रदायिक एकता के संबंध में उन्होंने कहा था कि मुझे एक ऐसी एकता में विश्वास है और मैं उसकी उन्नति के लिए सदैव प्रयत्न करता रहूँगा। इस प्रकार गाँधी जी ने सांप्रदायिक एकता स्थापित करना अपने जीवन का लक्ष्य समझा था।

रोगियों की सेवा

गाँधी जी ने अपना सारा जीवन सेवा कार्य में बिताया था। उन्होंने समाज की, देश की, रोगियों की सेवा किसी जाति वर्ग का भेद–भाव बिना देखे की थी। सेवा के लिए उन्होंने सेवाग्राम की स्थापना की। देहातों में जाकर सेवा करने का कार्य किया था। यदि उनके आश्रम में कोई रोगी आया तो वे एक माता की तरह उसकी सेवा करते थे। कुष्ट रोग भारत में भयानक और अछूत रोग माना जाता था। लोग उसे पूर्वजन्म का पाप मानकर ऐसे रोगियों के साथ बुरा व्यवहार करते थे। गाँधी जी ने बड़े प्यार से उनकी भी सेवा की। बलवंतसिंह उसके बारे में लिखते हैं कि कोढ़ जैसे अछूत रोग को देखकर भी उनका चित्त विचलित नहीं होता था। एक कोढ़ी की उन्होंने एक माह तक सेवा की। वह उसे अपने घर ले आये, उसके घावों को धोया, मरहमपट्टी की और नित्य उसकी सेवा करते रहे एवं स्वस्थ हो जाने के बाद उसे घर भेजा। मानव सेवा के उपरांत उन्होंने गौसेवा को भी अधिक महत्व दिया था। और उनका वृक्ष प्रेम भी अच्छा था। गायों रखने की ज़मीन में एक खजूर का पेड़ था, जो गाँधी जी ने कभी काटने नहीं दिया था। उनकी सेवा देखकर आश्रमवासी भी उनसे प्रभावित होते थे। सत्य तो यह है कि उनकी इस सेवा भावना के पीछे उनकी सरलता, सहृदयता और समाज से उपेक्षित मानवता के प्रति प्रेम था।

खादी प्रवृत्ति

गाँधी जी ने खादी को स्वदेशी के सिद्धांत का आवश्यक और अधिकतम महत्वपूर्ण निष्कर्ष और समाज के प्रति स्वदेशी धर्म के पालन का पहला आवश्यक कदम समझते थे। अपनी आत्मकथा में उन्होंने लिखा है कि मुझे याद नहीं पड़ता कि सन् 1908 तक मैंने चरखा या करघा नहीं देखा हो। फिर भी मैंने हिंद स्वराज्य में यह माना था कि चरखे के ज़रिये हिंदुस्तान की कंगालियत मिट सकती है। और सबके समझ सकने जैसी बात है कि जिस रास्ते भुखमरी मिटेगी उसी रास्ते स्वराज्य मिलेगा। उन्होंने खादी का प्रचार करके स्वावलंबन का प्रचार किया। गरीब व्यक्ति भी अपनी ज़रूरत के कपड़े हाथ से बुनकर पहनेगा। तब उसके स्वाभिमान की भी रक्षा होगी। खादी के प्रचार प्रसार के लिए चरखा ज़रूरी था। अतः उन्होंने चरखा संघ की स्थापना की और कहा – कातो, समझ बूझकर कातो, जो काते, वह खादी पहने, जो खादी पहने वह ज़रूर काते। मैंने समझ बूझकर करके माना है चरखा यानी कताई अहिंसा का प्रतीक है। वे मानते थे कि मिलों के कपड़े जीवन की सरलता खत्म कर देते हैं और यह व्यवसाय लाखों लोगों का न रहकर केवल कुछ लोगों के द्वारा होता है। उन्होंने यह माना कि मिलों के द्वारा बने वस्त्रों में हिंसा की संभावना रहती है। उन्होंने खादी का प्रचार प्रसार करके लोगों को स्वरोजगार की ओर प्रेरित किया और अपने आश्रमवासियों को मिल के कपडे पहनना बंद कराके जुलाहों से देशी मिल के सूत के कपड़े ही पहनने का आग्रह रखा। देशी जुलाहों से हाथ का बुना कपड़ा आसानी से नहीं मिलता था। इसके संबंध में उन्होंने कहा कि अब हम अपने हाथ से कातने के लिए अध ीर हो उठे। हमने देखा कि जबतक हाथ से कातेंगे नहीं तबतक हमारी पराधीनता बनी रहेगा। इस प्रकार खादी प्रवृत्ति से उन्होंने अहिंसा का प्रचार प्रसार तथा विलायती वस्त्रों का बहिष्कार किया, गाँवों के जुलाहों का रोजगार बढ़ा दिया और लाखों व्यक्तियों को जीविका का साधन दे दिया।

ग्रामोद्योग

गाँधी जी मानते थे कि भारत गाँवों में बसता है। इसलिए गाँवों का उद्धार ही भारत का उद्धार है। इनके समय में शहरीकरण और वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण यांत्रिकीकरण शुरु हुआ था। इस यांत्रिकीकरण से गाँवों के छोटे छोटे धंधा–रोज़गार टूटते जा रहे थे। गाँधी जी ने गाँवों को टूटने से बचाने के लिए खजूर, गुड़, नीरा बनाना, कुम्हार का काम, चरखा, चर्म उद्योग, तेल,मधुमक्खी पालन आदि कुटीर उद्योगों को महत्व दिया। गाँधी जी ने सेवाग्राम में सरकार से खास इज़ाजत लेकर मीठा–नीरा और गुड़ बनाने का काम आरंभ किया। उन्होंने कुम्हार का काम भी एक कुटीर उद्योग माना। क्योंकि मिट्टी के बरतन बनाने में कच्चे माल की कमी नहीं होती थी। हरेक इंसान इसे अपना सकता है। उन्होंने देखा कि गाँव के लोग छोटी सी छोटी चीज़ के लिए शहर के कारखानों के गुलाम बनते जा रहे हैं और इससे वे अपने पैसे, स्वास्थ्य ही नहीं अपने आत्म भी बरबाद कर रहे हैं। इसलिए उन्होंने कुम्हार काम का भी प्रचार प्रसार किया। अपने सेवाग्राम में चप्पल बनाने का व्यवसाय भी शुरु किया थां।

जब गाँवों में खेती का काम पूरा हो जाता है, तब किसान बैठे रहते थे। उनके लिए कुटीर उद्योग आर्थिक लाभ देनेवाले हैं, ;इससे उनकी आय में सुध ार आएगा, गाँधी जी का मत यही था। ऐसा एक उद्योग था, मधुमक्खी पालन। इससे किसान आर्थिक लाभ उठा सकता था। गाँधी जी के मत से प्रभावित किसान अपने खेतों में मधुमक्खी के छत्ते रखते थे और उनकी पैदावर में वृद्धि करते थे। किसान खेती के साथ साथ गौपालन भी कर सकता है। गाँधी जी का कहना था कि गाय आर्थिक और धार्मिक दोनों दृष्टियों से अनिवार्य है और हमारे जीवन की पूरक है। वे मानते थे कि गरीब किसान पशु पालन से भी रोज़गार पा सकता है। चरखा उद्योग या खादी बुनना गाँवों में एक पर्याय उद्योग है। किसान अपने फ़िजूल समय में बैठकर यदि चरखा चलाए तो वह अपने लिए कपड़े उत्पन्न कर पाएगा, स्वाभिमान की रक्षा होगी और इससे आर्थिक लाभ भी होगा। चरखे के बारे में गाँधी जी कहते थे कि चरखा गरीबों का सहारा है, दुःखियों का बंधु है और अंधे की लकड़ी है। इस प्रकार गाँधी जी का विचार था कि गाँवों में पूरक रोज़गार होने चाहिए जिससे अकाल या आर्थिक परिहानि के समय किसान अपना गुज़ारा कर सके।

शिक्षा और बुनियादी तालीम

उन्होंने देखा कि समाज में निरक्षरता है। उनका विचार था कि जबतक समाज में शिक्षा का व्याप बढ़ेगा नहीं, तबतक समाज कुरिवाज़ों के जाल में फँसा रहेगा। उन्होंने देखा कि भारत के पिछड़ेपन का कारण निरक्षरता है। वे कहते हैं कि जन साधारण में फैली हुई व्यापक निरक्षरता भारत का कलंक है। वह मिटना ही चाहिए। बेशक साक्षरता की मुहिम का आरंभ और अंत वर्णमाला के ज्ञान के साथ ही नहीं हो जाना चाहिए। वह उपयोगी ज्ञान के प्रचार के साथ साथ चलनी चाहिए।...उन्हें ऐसा ज्ञान देना चाहिए जिसका उन्हें रोज़ उपयोग करना पड़े। अतः उन्होंने अपने सत्याग्राहियों को गाँवों में भेजकर समाज में साक्षरता का बढ़ाने का कार्य किया। सन् 1937 में मारवाड़ी हाईस्कुल के एक समारोह पर उन्होंने शिक्षा के संबंध में अपने सुझाव प्रस्तुत किये थे वे थे –राष्ट्र के प्रत्येक बच्चे को 7 वर्ष तक निःशुल्क शिक्षा दी जाय, शिक्षा का माध्यम मातृभाशा हो और शिक्षा में अन्य विशयों के साथ उत्पादन कार्य का भी ज्ञान दिया जाय। गाँधी जी शिक्षा में बुनियादी तालीम को महत्व देते थे। शिक्षा के साथ विद्यार्थी को

स्वावलंबी बनाने के लिए छोटे छोटे काम भी सिखाये जाए ताकि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके।और विद्यार्थियों के संबंध में भी उन्होंने कहा कि विद्यार्थी विद्या के खोजी और ज्ञान की शोध करनेवाले हैं, राजनीति के खिलाड़ी नहीं।

मद्यपान निषेध

गाँधी जी ने सभी मादक पदार्थो का निषेध किया था। उनका मानना था कि मनुश्य जबतक मादक वस्तुओं का त्याग नहीं करता तबतक वह सत्याग्रह एवं नैतिक क्षमता का पालन नहीं कर सकता। गाँधी जी इस कार्यक्रम को कार्यरूप देने के लिए एवं इसके प्रचार के रूप में स्त्रियों और विद्यार्थियों का सहयोग प्राप्त करना चाहते थे। उनका विचार था कि स्त्रियों और विद्यार्थियों को मद्य निषेध का कार्यक्रम करने के लिए विशेष सुविधा है। प्रेमपूर्ण सेवा के कार्यों के द्वारा वे नशाखारों को प्रभावित कर उनकी आदत छुड़वा सकते हैं। उन्होंने कांग्रेस द्वारा देश का कार्यभार संभालने पर मादक द्रव्यों पर पूर्ण निषेध का तीन वर्शीय कायक्रम रखा और 25 वर्ष तक उनके रचनात्मक कार्य का विशिष्ट अंग बना रहा।

नारी उद्धार

गाँधी जी ने भारत की नारियों की दुर्दशा देखी थी। पराया धन मानकर नारी के साथ व्यवहार किया जाता था। वे गुलाम जैसी ज़िंदगी जी रही थीं। उसका अपना व्यक्तित्व नहीं था, उसे कोई स्वाधीनता नहीं मिली थी। उसे पिता या पति का कहा मानना पड़ता था। वे पुरुषों के समान शिक्षा नहीं पा सकती थीं। अतः गाँधी जी स्त्रियों को पुरुषों के समकक्ष बनाना चाहते थे। वे कहते थे कि स्त्रियों के अधिकारों के सवाल पर मैं किसी तरह का समझौता स्वीकार नहीं कर सकता। मेरी राय में उनपर ऐसा कोई कानूनी प्रतिबंध नहीं लगाया जाना चाहिए, जो पुरुषों पर न लगाया गया हो। पुत्रों और कन्याओं में किसी तरह का भेद नहीं होना चाहिए। उनके साथ पूरी समाानता का व्यवहार होना चाहिए। उन्होंने अपने जीवन काल में स्त्रियों की उन्नति पर ज़्यादा बल दिया था। उन्होंने स्त्रियों के लिए शिक्षा की हिमायत की और शिक्षा का प्रबंध किया। विध वाओं की दशा और भी बुरी होती जा रही थी। गाँध ी जी ने विधवा विवाह का समर्थन किया। भारत की स्वतंत्रता की व्याख्या करते हुए गाँधी ने ऐसा कहा है कि जब कोई सोलह साल की युवती सोलह श्रृंगार, बत्तीसों आभूषण से लदी, अँधेरी रात में बिल्कुल अकेली भारत के किसी कोने में घूमती रहे, उसे न कोई चोर लूट सके, न कोई हत्यारा मार सके, न कोई बलात्कारी उससे बलात्कार कर सके, तो मैं समझूँगा कि मेरा भारत आज़ाद है। यही स्वतंत्रता का सच्चा सुख होगा।गाँधी ने यह प्रार्थना इसलिए की, क्योंकि तत्कालीन समाज की नारी की स्थिति अत्यंत भयंकर थी। इसलिए उन्होंने स्त्रियों की शक्ति को बाहर लाने का संनिष्ठ प्रयास किया। उन्होंने कांग्रेसवालों को समझा दिया – स्त्री को अपना मित्र या साथी मानने के बदले पुरुष ने अपने को उसका स्वामी माना है। कांग्रेसवालों का यह खास हक है कि वे हिंदुस्तान की स्त्रियों को उनकी इस गिरी हुई हालत से हाथ पकड़कर ऊपर उठावें। इतना ही नहीं उन्होंने अपने आश्रम में स्त्रियों को प्राधान्य दिया, नारी शक्ति को उजागर किया और उनकी शक्ति का उपयोग सत्याग्रह और आज़ादी आंदोलन में किया।इस प्रकार गाँधी जी ने सांप्रदायिक एकता, मद्यपान निषेध, मातृभाषा प्रेम, बुनियादी तालीम, ग्रामोद्योग, गाँवों की सफ़ाई, अस्पृश्यता निवारण, गरीबों की सेवा और आर्थिक समानता के लिए अनेक कार्यक्रमों की रचना करते हुए अपने सपनों के भारत की तस्वीर को यथार्थ में लाने का प्रशंसनीय और अतिशय महत्वपूण र्ा कार्य किया।

अहिंसा के बिना सत्य की खोज असंभव है।

– महात्मा गांधी

विदेश मंत्रालय, भारत सरकार राज सभा हिंदी सलहाकार समिति के सदस्य प्रो० राम मोहन पाठक के साथ विशेष वार्ता

स्वच्छता ही सेवा

सुनिल रत्नसिरि
200 कक्षा–स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो

स्वच्छता का अर्थ हमारे शरीर, मन, और हमारे चारों तरफ़ की चीज़ों को साफ़ करना होता है। मानसिक, शारीरिक, वैदिक और सामाजिक हर तरीके से स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता बहुत ज़रूरी होती है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए शरीर की सफ़ाई बहुत आवश्यक होती है। ऐसा माना जाता है कि गंदगी और बीमार का चोली दामन का साथ है दोनों शरीर में जाते हैं। शरीर को स्वस्थ–तंदुरूस्त और बीमारियों से रहित रखने के लिए स्वच्छता बहुत ही अनिवार्य होती है। स्वच्छता का संबंध खान–पान और वेश–भूषा से भी होता है। रसोई की वस्तुओं और खाने–पीने का वस्तुओं का विशेष रूप से ध्यान रखना बहुत ज़रूरी होता है। बाज़ार से लाये जाने वाले फल, सब्ज़ी, अनाज को अच्छी तरह से धोकर प्रयोग में लाना चाहिए। पीने के पानी को हमेशा साफ़ बर्तन और ढककर रखना चाहिए।

अगर हम अपने घर और आस–पास के क्षेत्र में साफ़–सफ़ाई रखेंगे तो हम बहुत से रोगों के कीटाणुओं को नष्ट कर देंगे। सफ़ाई रखकर मनुष्य अपने मन की प्रसन्नता भी प्राप्त कर सकता है। सफ़ाई मनुष्य को अनेक प्रकार के रोगों से बचाती है। साफ़–सफ़ाई के माध्यम से मनुष्य आस–पास के पर्यावरण–वातावरण को प्रदूषित होने से बचा सकता है।

गंदे कपड़े कीटाणु युक्त होते हैं। इसलिए हमें हमेशा साफ सुथरे कपड़ों का प्रयोग करना चाहिए। अपने शरीर की स्वच्छता का ध्यान रखना भी बहुत ज़रूरी होता है। प्रतिदिन स्नान करना चाहिए। घर की सफाई के अलावा बाहर में समाज की बहुत भूमिका होती है। बहुत से लोग घर की गंदगी को घर के बाहर डाल देते हैं। उन्हें घर की गंदगी का निष्पादन ठीक प्रकार से करना चाहिए।

स्कूल और कॉलेजों में स्वच्छता के विभिन्न विषयों पर विद्यार्थियों को बहुत सारे होमवर्क दिए जाते हैं। आजकल यह बहुत ही महत्वपूर्ण विशय है क्योंकि एक बहुत बड़ी जनसंख्या स्वच्छता के अभाव में बीमारी की वजह से रोज़ मर रही है। इसलिए हमें जीवन में स्वच्छता के महत्व और ज़रूरत के बारे में जागरूक होना बेहद आवश्यक है । हजारों जीवन बचाने और उन्हें स्वस्थ रखने के लिए हम सभी को मिलकर स्वच्छता की ओर कदम बढ़ाने की ज़रूरत है ।

स्वच्छ भारत का सपना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देखा था , इस संदर्भ में उन्होंने कहा था –''स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा ज़रूरी है ।'' स्वच्छता ही स्वतंत्रता की राह पर ले जाती है। इनका कहना कि निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वास्थ और शांतिपूर्ण जीवन का अनिवार्य भाग है । स्वस्थ भारत अभियान 2 अक्तूबर 2014 को गांधी जयंती पर ही शुरू किया गया । भारतीय नागरिक के रूप में हम सभी इस अभियान के उद्देश्य और लक्ष्य को पूरा करने में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए ।

महात्मा गांधी की श्री लंका की यात्रा

श्रीमती मेधाविनि एदिरिवीरा
हिन्दी शिक्षिका इंडियन म्यूजिक अकादमी, नुगेगोड

महात्मा गांधी एक महान स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्होंने जिंदगी भर भारत को आजादी दिलाने के लिए संघर्ष किया। महात्मा गांधी एक ऐसे महापुरुष थे भारतियों के दिल में रह रहे हैं। भारत का हर एक व्यक्ति और बच्चा–बच्ची उन्हें बापू और राष्ट्रपिता के नाम से जानते हैं। गांधी जी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी है। उनका जन्मदिन दुनिया भर में अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है। तटीय गुजरात, भारत में एक हिन्दू व्यापारी परिवार में जन्म लिया और लन्दन के इनर टेम्पल में कानून में प्रशिक्षित गांधी ने निवासी भारतीय समुदाय के नागरिक अधिकारों के संघर्ष में दक्षिण अफ्रीका में एक प्रवासी वकील के रूप में अहिंसक नागरिक अक्षा को पहले नियोजित किया।

महात्मा गांधी 'भारत के राष्ट्रपिता' ने 12 नवंबर 1927 में सिलोन की ऐतिहासिक यात्रा की। उनकी पहली और एकमात्र यात्रा पर उन्हें श्री लंका के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों चार्ल्स एडगर कोरा और उनके भाई विक्टर कोरा द्वारा चिलाव में आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अपनी पत्नी कस्तूरबा, राजगोपालाचारी और बाद की बेटी लक्ष्मी के साथ यात्रा की। सिलोन की यात्रा पर महात्मा गांधी के साथ उनके सचिव महादेव देसाई और प्यारेलाल भी थे। 1927 में सिलोन की यात्रा पर उन्होंने चिलाव में कोरा परिवार में 'कताई के लिए स्वराज' नामक एक कताई पहिया और एक रंगीन पोस्टर का उपहार दिया। गांधी सिलोन में तीन हफ्तों तक रहे। उन्होंने देश की लंबाई और चौड़ाई तक यात्रा की। उनकी यात्रा ने सब में बड़ा उत्साह पैदा किया। चिलाव के अलावा महात्मा गांधी ने श्री लंका के तीन सप्ताह की लंबी यात्रा के दौरान कोलंबो, कैंडी, गोल, जाफना, नुवराएलीया, मातले, बंडारवेला, बदुल्ला और हैटन का दौरा किया और श्री लंकाई श्रोताओं के लिए कई भाषण दिए। सिलोन में रहने के दौरान उन्होंने सिलोन में बौद्ध थियोसोफिकल सोसायटी द्वारा स्थापित स्कूलों का भी दौरा किया, अर्थात् कोलंबो में आनंद कॉलेज, गोल में महिंदा कॉलेज और कैंडी में धर्मराज कॉलेज।

महात्मा गांधी ने सिलोन में बौद्ध थियोसोफिकल सोसाइटी द्वारा स्थापित स्कूलों का भी दौरा किया और वहां छात्रों और शिक्षकों को संबोधित किया। गोल महिंदा कॉलेज में अपने भाषण के दौरान गांधी ने कहा कि वह निश्चित थे कि एक ऐसे देश के बच्चे जो आत्महत्या के अलावा जीभ में निर्देश प्राप्त करते हैं। "मुझे यकीन है कि देश के बच्चे जो स्वयं को आत्महत्या करने के अलावा जीभ में निर्देश प्राप्त करते हैं। यह उन्हें अपने जन्म के अधिकार से लूटता है। एक विदेशी माध्यम का अर्थ है युवाओं पर एक अनावश्यक तनाव, यह उन्हें सभी मौलिकता से लूटता है। "कोलंबो के आनंद कॉलेज में छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने स्कूल के बच्चों को देखने के लिए अपने प्यार के बारे में बात की और ध्यान दिया कि सिलोन एक सुंदर द्वीप है। आनंद कॉलेज के कर्मचारियों, माता–पिता और बच्चों ने 400.86 रुपये जुटाए और महात्मा गांधी को 'खादी संग्रह' के लिए दान के रूप में धन प्रस्तुत किया।

18 नवंबर, 1927 को महात्मा गांधी धर्मराज कॉलेज कैंडी के छात्रों को संबोधित करते थे और दूसरों के बीच उन्होंने धूम्रपान करने की आदत और नॉनस्मोकर बनने के महत्व पर बात की थी। उन्होंने कहा कि, "धूम्रपान क्यों करें, जब इसके लिए कोई आवश्यकता नहीं है? यह कोई खाना नहीं है। बाहर से सुझाव के माध्यम से पहले उदाहरण में छोड़कर इसमें कोई आनंद नहीं है। यदि आप अच्छे लड़के हैं, तो आप लड़के हैं, अगर आप अपने शिक्षकों और माता–पिता के प्रति आज्ञा मानते हैं, धूम्रपान छोड़ दें और जो भी आप इससे बचें, कृपया मुझे लाखों भारत के लिए भेजें।"

महात्मा गांधी, भारत के राष्ट्रपिता ने अपने अहिंसात्मक आंदोलन से उन्होंने देश के बहुत से लोगों को प्रेरित किया था। और साथ ही ब्रिटिश राज से भारत को मुक्त भी किया था। गांधी जी को सत्य और सरलता की मूर्ति माना जाता है। महात्मा गांधी महान पुरुष थे उन्होंने अपने जीवन में कई महत्वपूर्ण काम किए। महात्मा गांधी 2 अक्टूबर 1869 को दुनिया में आए और 30 जनवरी 1948 को दुनिया से चले गए। गांधी ने भारत का एक स्वतंत्र देश बनाने का अपना जीवनभर लक्ष्य पूरा किया।

दूर–दूर तक हिंदी की पहुँच
स्वर्णजयंति महा विद्यालय कॅगोल

कॅलणिय विश्वविद्यालय

बौद्ध और पालि विश्वविद्यालय

शिशु से राष्ट्रपिता

वरूणी उत्पला नानयक्कार
गुरूकुल भाषा केंद्र, नुगेगोड

जन्मा शिशु एक कलंदर
शहर का नाम पोरबंदर
माता–पिता का प्यारा वह
घर–भर का दुलारा वह
जा पहुँचा वह तो विलायत
लौटा करके पूरी वकालत

दक्षिण अफ्रीका के गोरे शासक
अत्याचार करते थे भरसक
सत्याग्रह अहिंसक हथियार
झेले उनके सारे वार
आज़ादी की जोत जगायी
भारत भी प्रेरणा आयी

आमरण अनशन का हुआ प्रसार
आंदोलन में कभी न मानी हार
स्वाधीन देश का वह राष्ट्रपिता
गौरव से था जीता–मरता ।

**उपद्रव सहते जाना ही बस नहीं है।
इससे तो कायरता पैदा होती है।
– महात्मा गांधी**

भारतीय अस्मिता और महात्मा गांधी का हिंदी के प्रति दृष्टिकोण

जगत के लिए जो आवश्यक वस्तु है उस पर कब्ज़ा रखना भी हिंसा है।

डॉ पुष्पा रानी
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिंदी–विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

भाषा के संबंध में गाँधीजी का विचार राजनीतिक अथवा भूख न होकर अत्यंत संतुलित तथा गंभीर था। उनका कहना था कि भारत के पास परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है। जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता समझता है और हिंदी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है। महात्मा गाँधी के सपनों के भारत में एक सपना राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को प्रतिष्ठित करने का था। उनका मानना था कि राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है। हृदय की कोई भाषा नहीं है। हिंदी से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है। हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए।

वास्तव में हिंदी का प्रश्न भारतीय अस्मिता से जुड़ा है। भारत के संबंध में भारतीय भाषाओं में ही सबसे अधिक लिखा गया है। इसके संबंध में जो विदेशी भाषाओं में लिखा गया है, वह भी यहीं की भाषाओं के आधार पर लिखा गया है। भारत के वर्तमान मुद्दे को समझने के लिए आर्य और द्रविड़ भाषाओं के साहित्य को देखना अनिवार्य है। आज हिंदी किसी न किसी रूप में जोड़ने का कार्य कर रही है। आज इसका विस्तार भूमंडल में सबसे अधिक है। आज की हिंदी सब कुछ व्यक्त करने में समर्थ है। मात्र आत्मविश्वास की आवश्यकता है। इसमें भारतीय अस्मिता भी समाहित है।

गाँधीजी के विचार शिक्षा के माध्यम के संदर्भ में स्पष्ट थे। वे अंग्रेजी भाषा को लौटने को कपटपूर्ण कृति समझते थे। उनका मानना था कि भारत में 90: व्यक्ति 14 वर्ष की आयु तक पढ़ते है। अतः मातृभाषा में ही अधिक से अधिक ज्ञान होना चाहिए। उन्होंने 1989 में सब राज्य में अपने विचार प्रकट किए थे। उनके अनुसार हजारों व्यक्तियों को अंग्रेजी सीखना ना उन्हे गुलाम बनाना है। गाँधीजी विदेशी माध्यम से कटु विरोधी थे। उनका मानना था कि विदेशी माध्यम बच्चों पर अनावश्यक दबाव डालने रखने और नकल करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है तथा उनमें मौलिकता का अभाव पैदा करता है। यह देश के बच्चों को अपने ही घर में विदेशी बना देता है। गाँधीजी के अनुसार विदेशी माध्यम का आरोप बिना किसी देरी के तुरंत रोक देना चाहिए। उनका मत था कि मातृभाषा का स्थान कोई दूसरी भाषा नहीं ले सकती। उनके अनुसार गाय का दूध भी माँ का दूध नहीं हो सकता। विदेशी लोग अपने देश के स्वतंत्र होने पर अपनी भाषा में कार्य करने लगे। देखते–देखते उनकी उन्नति होने लगी। उनकी सोई हुई शक्ति जागृत हो गई। हमें इसके व्यवहार पक्ष को बढ़ाना और संपन्न करना होगा।

सबसे बड़ी बात यह है कि अगली पीढ़ी की तैयारी हिंदी में करनी है। राज ऋषि पुरुषोत्तम दास टंडन हिंदी के दधीचि थे और हिंदी साहित्य सेवियों का इतिहास को देखना चाहिए। हिंदी का जो कुछ भी विकास हुआ है। वह त्याग और बलिदान से हुआ है। हिंदी को रोजगार बनाना उत्तम है और इसकी सेवा को रोजगार परक बनाना उत्तम नहीं है। अभी इसके लिए मेहनत की आवश्यकता है। इस में व्याप्त भारतीय अस्मिता को इसी के माध्यम से उजागर करना होगा। विदेशों में भी हिंदी का प्रचार–प्रसार हो रहा है। हिंदी का वैश्विक स्वरूप भी भारतीयता से ओत प्रोत है। ज्ञान के साथ–साथ संस्कार भी आवश्यक है। जिन रचनाकारों ने भारतीयता के विविध स्वरूपों को बिम्ब और प्रतीकों के माध्यम से अपने साहित्य सेतु को प्रस्तुत किया है वह धन्य है। हिंदी की सेवा पद से नहीं सेवा भाव से की जानी चाहिए। हिंदी हमारी माँ है। भारतीय संस्कृति मात्र प्रधान है। हमें इसके प्रति श्रद्धा भाव रखना चाहिए। महात्मा गाँधी भी अपनी माँ मातृभूमि और मातृभाषा से अटूट स्नेह रखते थे।

महात्मा गाँधी किसी भाषा के विरोधी न थे। अधिक से अधिक भाषाओं को सीखना उचित समझते थे। प्रत्येक भाषा का ज्ञान को वह महत्वपूर्ण मानते थे किंतु उन्होंने निज मातृभाषा और हिंदी का सदैव समर्थन किया। महात्मा गाँधी की भाषा के प्रश्न कौशल राज्य से जोड़ दिया। स्वराज्य देश के करोड़ों भूखे अनपढ़ दलितों के लिए होता है तो सामान्य जन की भाषा हिंदी को राष्ट्रीय भाषा बनाना होगा। उनके अनुसार सभी भारतीय भाषाओं की लिपि एक ही होनी चाहिए। ऐसी लिपि देवनागरी लिपि ही हो सकती है। देवनागरी लिपि संसार की समस्त लिपियों में सबसे अधिक वैज्ञानिक परिपूर्ण और निर्दोष लिपि है और राष्ट्रीय एकता में सहायक है। उनका मोह फारसी लिपि के प्रति भी था किंतु वे चाहते थे कि सर्वमान्य लिपि के रूप में देवनागरी लिपि स्वीकार की जाए तथा उसे राष्ट्रीय लिपि की मान्यता दी जाए।

हिंदी हमारी संस्कृति की रक्षा कर रही है। यह आंदोलन की भाषा बनी हिंदी नेताओं ने भी इस माध्यम को स्वीकार किया। सुभाष चंद्र बोस ने आजाद हिंद फौज की स्थापना की। उन्होंने इस को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रस्ताव रखा। मात्रा–भेद के साथ आज यह सभी प्रांतों में बोली जाती है। हिंदी में राष्ट्रीय साहित्य सर्वाधिक है। इसमें राष्ट्रीय अस्मिता सुरक्षित है। एक अनुकरणीय उदाहरण है। जापान रूस जर्मनी फ्रांस चीन आदि देशों ने न केवल अपनी भाषा में आधुनिक एवं अतिसंवेदनशील कंप्यूटर विकसित किए हैए बल्कि शिक्षा का माध्यम भी अपनी भाषा को बनाया है। उनको भक्ति की पराकाष्ठा पर पहुंचने में अंग्रेजी भाषा की रंचमात्र आवश्यकता नहीं है। विकास की दृष्टि से किसी से भी पीछे नहीं है। भारत में भी पहले से हिंदी बहुत आगे बढ़ी है। परंतु अभी अंग्रेजी से मोह भंग नहीं हुआ है। हीनता की भावना बनी हुई है। एक आत्मीयता के साथ हमें हिंदी के साथ जीने का संस्कार उत्पन्न करना होगा। आज हमारी शिक्षा व्यवस्था प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा हिंदी माध्यम से होनी चाहिए। इसके साथ प्रांतीय क्षेत्रीय भाषाओं को भी हिंदी प्रांतों में स्थान मिलना चाहिए।

भारत मुक्ति के कुछ सप्ताह उपरांत ही महात्मा गाँधी ने हिंदी के संबंध में एक लेख लिखा था भारत और स्वतंत्र हो गया है। अतः अधिक से अधिक 6 माह में राष्ट्र का समस्त कार्य हिंदी में शुरू हो जाना चाहिए। इस काम में जितनी देरी होगी उतना ही अहित होगा। इसकी मूलभूत विशेषताओं को देखते हुए आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती ने 48 वर्ष की आयु में इसको सीखना आरंभ कर दिया और 59 वर्ष की अवस्था तक सीखकर प्रवचन और लेखन कार्य हिंदी में करने लगे थे। अतः हमको इसके लिए त्याग करके कार्य करना होगा। परिश्रम करना होगा मात्र नारा लगाने से कुछ नहीं होगा। आज देश में इसको जानने वाले 74: लोग है पर इसको चौथे स्थान नहीं मिल पा रहा है। सन 2004 में भारत में कुल हिंदी जानकारों की संख्या 672241910 है अर्थात 73:है। विश्व में जानकारों की संख्या 938033266 है। डॉ. पीकात श्री पाठक को लिखे पत्र में कहा था उन्होंने एक ऐसा प्रस्ताव पारित करवाने में सफलता प्राप्त की है। भारत में आने वाले अंग्रेजों की हिंदी परीक्षा पास करना अनिवार्य किया जाए। हिंदी को नकार कर भारत को न समझा और समझाया जा सकता है। यह उत्तर दक्षिण में सेतू है। प्रेमचंद ने लिखा है राष्ट्र की बुनियाद राष्ट्रभाषा है।

आज विश्व बाजार में हिंदी पहुंच चुकी है। इस दिशा में हमें इसकी अस्मिता की रक्षा करनी चाहिए। नई पीढ़ी के समक्ष एक चुनौती है कि बाजार से जुड़ना और उससे लाभ लेना ठीक है पर उसमें अपने को खो देना ठीक नहीं। हमें भारतीयता का सदैव स्मरण करते रहना चाहिए। हिंदी विकासशील और भारतीय भाषा है। भारत के सबसे बड़े व्यापार इन ब्रिटेन अमेरिका जर्मनी कनाडा थाईलैंड सिंगापुर चीन नेपाल भूटान पाकिस्तान और अफगानिस्तान देश है। इनमें अंग्रेजी वक्ताओं की संख्या हिंदी से कम है। उपभोक्ता की दृष्टि से भारत का महत्व अधिक है। इसके लिए सबको हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की आवश्यकता पड़ेगी। आज हिंदी विज्ञापन दूरदर्शन इंटरनेट मुद्रा भाषा देव भाषा दृष्टि भाषा के रूप में विकास हो रहा है। विनोद में समर्थ भाषा बन रही है। हम भी बदलाव करें अपने को बेचकर या खोकर नहीं।

आज के संदर्भ में हिंदी और अपनी अस्मिता के लिए नए आंदोलन की आवश्यकता है। संस्कृति रक्षा की अस्मिता के साथ इसको रोज़गार परक बनाना चाहिए। विश्व की कितनी भाषाएँ रोज़ रोज़गार परक होकर विकसित होती जा रही है। जो बेरोजगार परख होती जा रही हैं वे समाप्त होती जा रही है। उसमें अपने देश का इतिहास देख रहे हैं। हिंदी का विकास अपनी अस्मिता के साथ राष्ट्रभाषा राजभाषा व्यापार भाषा रोजगार परक भाषा साहित्य भाषा संपर्क भाषा और विश्व भाषा के रूप में हो रहा है।

बच्चों की प्यारी वार्षिक अंतरराष्ट्रीय शंकर चित्रकला प्रतियोगिता की कुछ झलकियाँ

भारतीय व्यंजन सबके मन को भाये

गुजरात का गरबा

स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र
16/2, ग्रेगरी रोड, कोलंबो 07
Swami Vivekananda Cultural Centre
16/2, Gregory's Road, Colombo 07
फ़ोन/Phone: (011) 2684698 | फ़ैक्स/Fax: (011) 2684697
इमेल/Email: iccrcolombo@gmail.com
फ़ेस्बुक/Facebook: facebook.com/ indianculturalcentre

ISSN 2659-2355

संपादक
डॉ. मोनिका शर्मा

सहायक संपादक
सुश्री नधीरा शिवंति
श्रीमती अमानि विक्रमआरच्चि